एचएलएल

समन्वया

अंक - 27, सितंबर 2018

एचएलएल जन सेवा के पथ से अग्रसर

एचएलएल -
राजभाषा कार्यान्वयन में प्रतिबद्ध

नो
स्टेरॉइड
नो
साइड इफ़ेक्ट्स

सहेली गर्भनिरोधक गोली

कॉल करें टॉल फ़्री नं:

1800 425 3223

Disclaimer: Saheli only claims to not cause side effects generally associated with hormonal pills like facial hair growth, weight gain, nausea, vomiting, headache etc. However, few may experience a delay in their menstrual cycle.

एचएलएल

समन्वया

अंक - 27, सितंबर 2018

विषय-सूची

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से.....7

संपादकीय.....8

एचएलएल में संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति का निरीक्षण.....10

एचएलएल जन सेवा के पथ से अग्रसर.....11

एचएलएल - राजभाषा कार्यान्वयन में प्रतिबद्ध.....18

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) के कार्यकलाप.....22

राजभाषा सेमिनार में पुरस्कृत लेख.....24

एचएलएल - स्वस्थ पीढियों के लिए नवान्वेषण की ओर एक संगठन.....30

बाढ से पीडित केरल के उत्थान में एचएलएल भी.....35

ताज़ा खबर.....36

पारिभाषिक शब्दावली.....38

संपादक मंडल

संरक्षक डॉ आर.के वत्स आई ए एस, अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक, **संपादक** श्री पी. श्रीकुमार, कंपनी सचिव एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष (सी ए एस), **सहायक** डॉ.एस.एम.उण्णिकृष्णन सह उपाध्यक्ष (एस पी & सी सी), श्रीमती सुधा गोपिनाथ, प्रबंधक (कॉर्पोरेट संचार), डॉ.वी.के.जयश्री, उप महा प्रबंधक (हिंदी), डॉ. सुरेष कुमार. आर , उप प्रबंधक (राजभाषा)

डिजाइनिंग श्री श्रीजित.एस.एल, (कॉर्पोरेट संचार), **डिजाइनिंग समन्वयक** श्री महेष मात्यु

संपादकीय सहायक शालिनी.एस.एस, मीना.एम.वी, लीना.एल, लक्ष्मी सुदर्शन

मुद्रक अक्षरा ऑफसेट प्रिंटेर्स, तिरुवनंतपुरम।

समन्वया में प्रकाशित लेखों में निहित विचार लेखकों के अपने हैं, इससे एचएलएल लाइफ़केयर का कोई संबंध नहीं है।

एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड, निगमित एवं पंजीकृत कार्यालय, पूजप्पुरा, तिरुवनंतपुरम - 695 012, केरल, दूरभाष: 2354949

वेब: www.lifecarehll.com **फैक्स:** 0471-2358890

अंक 27, सितंबर 2018

संपादित एवं प्रकाशित: हिंदी विभाग, तैयारकर्ता - कॉर्पोरेट संचार विभाग, एचएलएल लाइफ़केयर लिमिटेड (केवल मुफ्त परिचालनार्थ)

सत्यमेव जयते

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH
गृह मंत्री, भारत
HOME MINISTER, INDIA

प्रिय देशवासी बहिनो एवं भाइयो !

हिंदी दिवस पर आपको मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

भाषा, किसी भी राष्ट्र की सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की संवाहिका होती है और भाषायी एकता से ही राष्ट्र की अखण्डता सुदृढ़ होती है। कोई भी देश स्वभाषा के बिना अपने राष्ट्रीय व्यक्तित्व को मौलिक रूप से परिभाषित नहीं कर सकता।

पुरातन काल से 'हिंदी' हमारे राष्ट्रीय व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करती आ रही है और आज वह भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ–साथ भारत के संविधान में वर्णित भावनात्मक एकता को मजबूत करने का भी माध्यम है। हिंदी ने भारतीय संस्कृति से संविधान निर्माण प्रक्रिया तक और पुरातन युग से स्मार्ट फोन के प्रयोग तक का लंबा सफर तय करते हुए हमारी सामासिकता को अक्षुण्ण रखने में महती भूमिका निभाई है और देशवासियों में अनेकता में एकता की भावना को भी पुष्ट किया है।

जिस देश के नागरिक अपनी भाषा में सोचें और लिखें, विश्व उस देश को सम्मान की दृष्टि से देखता है। भारत जैसे विशाल, बहुभाषी और प्रजातांत्रिक देश की चहुँमुखी विकास प्रक्रिया में हिंदी के साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं की भी अहम भूमिका रही है। हमारे देश की सभी भाषाएँ और बोलियाँ हमारी राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक धरोहर हैं और इनका प्रयोग एवं प्रचार–प्रसार करना, यह हमारा कर्तव्य है।

भारतीय संविधान द्वारा दिनांक 14 सितंबर, 1949 को धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक परंपराओं को जोड़ने की कड़ी और अधिकांश देशवासियों द्वारा बोली एवं समझी जाने वाली, 'हिंदी भाषा' को 'संघ की राजभाषा' के रूप में चुना गया है। इसके साथ ही, संघ सरकार को यह महत्वपूर्ण दायित्व भी सौंपा गया कि वह अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली एवं पदावली को आत्मसात करते हुए हिंदी भाषा का विकास करे ताकि वह भारतीय संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

आज कोई भी भाषा कंप्यूटर तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से दूर रह कर जन–मानस से जुड़ी नहीं रह सकती। वर्तमान में डेटाबेस के आधार पर मशीनी अनुवाद के जरिए पूरे विश्व में अनुवाद कार्य किया जा रहा है। केंद्र सरकार के कामकाज में अत्यधिक मात्रा में नियमित आधार पर किए जाने वाले अनुवाद कार्य में लगने वाले अतिशय मानव संसाधन और समय को बचाने के लिए राजभाषा विभाग ने सी–डैक, पुणे की सहायता से 'कंठस्थ' नामक अनुवाद सॉफ्टवेयर भी तैयार किया है। भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने भी एक अभिनव पहल करते हुए 'हिंदी प्रौद्योगिकी संसाधन केंद्र' की स्थापना की है ताकि कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने के लिए नवीन ई–टूल्स विकसित किए जा सकें।

निज भाषा के प्रति स्वाभिमान और हिंदी भाषा का समुचित ज्ञान एवं तकनीकी कुशलता ही हिंदी में कार्य करने का मुख्य आधार है । मुझे विश्वास है कि केंद्र सरकार के मंत्रालयों एवं विभागों आदि में इन सॉफ्टवेयरों के अधिकाधिक प्रयोग से द्विभाषीकरण यानि अनुवाद कार्य अपेक्षाकृत सरल होगा और इससे राजभाषा कार्यान्वयन को गति मिलेगी।

सूचना प्रौद्योगिकी के मौजूदा दौर में हमें हिंदी के विभिन्न ई–टूल्स जैसे यूनिकोड, हिंदी की–बोर्ड, लीला स्वयं हिंदी शिक्षण सॉफ्टवेयर, अनुवाद ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म, श्रुतलेखन, ई–महाशब्दकोश आदि का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करना चाहिए।

मॉरीशस में 18–20 अगस्त, 2018 को आयोजित किए गए 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में भी यह तथ्य उजागर हुआ है कि वैश्विक स्तर पर हिंदी तेजी से अपनी नई पहचान स्थापित कर रही है। तथापि, पहले हमें राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को वह उच्चतम स्थान दिलाने के लिए कटिबद्ध होना होगा जिसकी वह अधिकारिणी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे सामूहिक एवं सार्थक प्रयासों से निकट भविष्य में हमें सकारात्मक परिणाम अवश्य प्राप्त होंगे।

मेरे प्रिय देशवासियो, हमें हिंदी का प्रचार–प्रसार केवल सरकारी स्तर तक सीमित न रख कर इसे भारत के जन–जन तक ले जाना होगा ताकि सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ देश के प्रत्येक नागरिक को मिल सके। साथ ही, हमें न केवल भारत अपितु पूरे विश्व में हिंदी भाषा का प्रकाश फैलाने के लिए अपना योगदान देना होगा ।

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सब को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ !

जय हिंद !

(राजनाथ सिंह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2018

सिल्वर

मूड्स

कण्डोम

लॉचिंग
सिल्वर मूड्स कंडोम

www.moodsplanet.com /moodscondoms

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से

'अवस्था पर रोते हुए अपना समय बरबाद करने के बजाय इसके हल के बारे में सोचते हुए समय का सदुपयोग करना, क्योंकि सफलता कर्म के नीव पर खडा है।'

आज एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड ने, कंडोम के विनिर्माण पर आधारित एक गर्भनिरोधक कंपनी मात्र नहीं, अस्पताल उत्पाद, फार्मा उत्पाद, प्राकृतिक उत्पाद, अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय, स्वास्थ्यरक्षा सेवा, मकानों का निर्माण आदि क्षेत्रों में संकेंद्रित करके 115 से अधिक राष्ट्रों तक अपने उत्पादों का विपणन करते हुए अपने विजय यात्रा का शंख बजाकर आगे की ओर अग्रसर हो रही एक बहु सेवा प्रदायक अंतर्राष्ट्रीय कंपनी बनकर संपूर्ण विश्व पर अपने विपणन नेटवर्क का जाल बिछाया है।

एचएलएल की छत्रछाया के नीचे कंपनी की छह फैक्टरियाँ - पेरूरकडा, आक्कुलम, कनगला, काक्कनाड, ऐरापुरम एवं मनेसर; चार समनुषंगी कंपनियाँ - एचबीएल, जीएपीएल, हाइट्स, एचएमएल और सेवा क्षेत्र में हिंदलैब्स डायग्नोस्टिक केंद्र, हिंदलैब्स एमआरआई & सीटी स्कान केंद्र, लाइफकेयर केंद्र, अमृत फार्मेसी, मातृ & शिशुरक्षा अस्पताल, लाइफस्प्रिंग अस्पताल एवं हिंदुस्तान लैटेक्स परिवार नियोजन प्रोन्नमन न्यास (एचएलएफपीपीटी) हैं, जिसके माध्यम से कंपनी भारत भर के आम लोगों, विशेषतः महिलाओं एवं बच्चों, को किफायती कीमत पर गुणवत्ता वाली स्वास्थ्यरक्षा सेवायें प्रदान करके एक स्वास्थ्य संपूर्ण राष्ट्र के निर्माण में लगी रहती है। दरअसल यह जीत, हमारे विहंगम दृष्टिकोण एवं कर्मठता का परिणाम ही है।

सही बात यह है कि बाज़ारीकरण के इस युग में केंद्र सरकार की कंपनी एचएलएल को अपनी जनोपयोगी सेवायें एवं स्वास्थ्यरक्षा उत्पादें आम लोगों के बीच पहूँचाते हुए अपना विपणन बढाने के लिए जन - मन की भाषा एवं सबसे बडे उपभोक्ता बाज़ार की भाषा हिंदी को अपनाने और इस भाषा में कार्य करने में जोर देने की आवश्यकता है। इसके मद्देनज़र, कंपनी के कर्मचारियों को राजभाषा नीति का ज्ञान अद्यतन करके हिंदी में अपना शासकीय काम करने के लिए उनके मन में हिंदी का परिवेश लाने के उद्देश्य से हर साल वैविद्यपूर्ण एवं नवाचार हिंदी कार्यक्रम - कॉलेज अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के लिए राजभाषा तकनीकी सेमिनार, कॉलेज विद्यार्थियों के लिए करियर मार्गदर्शन कार्यक्रम, यूनिटवार बोलचाल हिंदी क्लास, हिंदी फोरम बैठकें, हिंदी प्रशिक्षण, हिंदी स्मरण परीक्षा, कंपनी के कर्मचारियों एवं उनके बच्चों के लिए हिंदी प्रतियोगितायें, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम, हिंदी मेला, हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, करकुलम पंचायत के चार स्कूलों के बच्चों के लिए हिंदी प्रतियोगितायें एवं बोलचाल हिंदी क्लास - आयोजित करते रहते हैं। इस प्रकार हम, हिंदी भाषा के प्रचार - प्रसार में बढावा लाने के लिए युवा पीढी को सुसज्जित करने के श्रम में भी अडिग रहते हैं।

यहाँ एकदम उल्लेखनीय बात यह है कि हर साल नवाचार हिंदी कार्यक्रम आयोजित करते हुए राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन में प्रमुखता देते रहे एचएलएल को गत कई वर्षों से लगातार नराकास राजभाषा निष्पादन पुरस्कार एवं नराकास राजभाषा पत्रिका पुरस्कार प्राप्त होता रहता था । यह मात्र नहीं, एचएलएल नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) का नेतृत्व संभालते हुए सदस्य कार्यालयों की सहभागिता से बहुआयामी हिंदी कार्यक्रम सफल तरीके से आयोजित कर रहा है। जिसके फलस्वरूप, तिरुवनंतपुरम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) अपने गठन के दोनों वर्षों में राजभाषा हिंदी के सर्वोत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए केंद्र गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा लगाये गये क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार (तीसरा स्थान) के लिए हकदार बन गयी।

वास्तव में, एचएलएल के जनसेवी परियोजनाओं एवं विभिन्न हिंदी कार्यकलापों का विस्तृत विवरण हम कंपनी की राजभाषा पत्रिका 'समन्वया' के कैनवास के माध्यम से देश के आर पार प्रेषित करने का प्रयास करते हैं। यहाँ राजभाषा पत्रिका 'समन्वया' के सत्ताईसवाँ अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करने में मुझे बडी खुशी है। पाठकों से मेरी कामना है कि इस राजभाषा पत्रिका के आगामी अंकों को और भी मनमोहक, ज्ञानार्जित एवं सारगर्भित बनाने के लिए अपने बहुमूल्य सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत करा दें।

हर्दिक शुभकामनाओं के साथ।

डॉ.आर.के.वत्स आई ए एस
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संपादकीय

यह सर्वविदित है, हिंदी भाषा आज की माँग है और इसकी ग्रहणशीलता के आधार पर यह हमारी अपेक्षाओं को पूरा करने की सशक्त कडी बन गयी है। पहले साहित्य के क्षेत्र में मात्र सीमित हिंदी भाषा का आज सोश्यल मीडिया के विभिन्न आयामों - इंटरनेट, फेसबुक, ट्विटर, यू - ट्यूब, ब्लॉग - विकीपीडिया, मोबाइल - एसएमएस - में बोलबाला है। इस प्रकार संसार भर में हिंदी भाषा अपनी पहचान बनायी जा रही है। अतः आगे इस भाषा का नजरअंदाज करना नामुमकिन है।

इस दृष्टि से, संघ सरकार द्वारा राजभाषा की हैसियत प्राप्त हिंदी भाषा के क्रमिक विकास एवं प्रचार - प्रसार करने और एचएलएल के कर्मचारियों द्वारा राजभाषा हिंदी को अपने कामकाज की भाषा के रूप में स्वीकार करने के लिए आवश्यक प्रेरणा देने तथा अपने कर्मचारियों, कॉलेज के अध्यापकों/विद्यार्थियों को कंप्यूटर में उपलब्ध आधुनिक हिंदी तकनॉलजी के बारे में अवगत करने और इस प्रकार कंपनी के राजभाषा हिंदी के प्रोन्नमन में अधिकाधिक वृद्धि लाने की ओर हिंदी कार्यशाला, हिंदी प्रतियोगिता, हिंदी सेमिनार, हिंदी मेला, राजभाषा तकनीकी प्रशिक्षण, बोलचाल हिंदी क्लास जैसे प्रेरक कार्यक्रम हम कंपनी में लगातार आयोजित करते में समर्थ निकले।

वास्तव में, एचएलएल की राजभाषा पत्रिका 'समन्वया', कंपनी की परछायी रही है, क्योंकि इससे हम एचएलएल के राजभाषा कार्यान्वयन का मात्र नहीं, कंपनी के नवाचार पद्धतियों एवं सेवाओं का पूरा का पूरा विवरण रेखांकित करते हैं। मैं, बेहद खुशी के साथ इस राजभाषा पत्रिका 'समन्वया' के सत्ताईसवाँ अंक आपके सामने प्रस्तुत करना चाहता हूँ। सभी पाठकों से मैं उम्मीद करता हूँ कि इस पत्रिका का अगला अंक अधिक आकर्षक एवं ज्ञानवर्द्धक बनाने की ओर अपने मूल्यवान सुझावों से हमें मार्गनिर्देश दें।

हर्दिक शुभकामनाओं सहित।

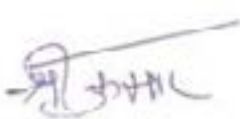

पी. श्रीकुमार
कंपनी सचिव एवं वरिष्ठ
उपाध्यक्ष (सी ए एस)

एचएलएल लाइफ़केयर लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

एचएलएल/3-17(हि.प.स)/2018 - 8646 05-09-2018

अपील

भारत के संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को हिंदी भाषा को संघ सरकार की राजभाषा की पदवी दी गयी। तदनुसार, हिंदी भाषा संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार संघ सरकार की राजभाषा बनी है। उस दिन की यादगार में हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में और उसके पश्चात हिंदी पखवाड़ा के रूप में मनाये जाते हैं। सभी सरकारी कारोबार में अधिकतम सीमा तक हिंदी के प्रयोग के लक्ष्य के साथ कार्यालयों में कर्मचारियों के बीच जागरूकता पैदा कराने और राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग बढ़ाने की ओर अनुकूल वातावरण बनाना ही हिंदी दिवस / पखवाड़े समारोह मनाने का उद्देश्य है।

हम सब सार्वजनिक उपक्रमों के अंतर्गत आने से, राजभाषा अधिनियम, नियम, राष्ट्रपति के आदेश, वार्षिक कार्यक्रम और समय-समय पर भारत सरकार द्वारा जारी किये जा रहे कार्यालय ज्ञापन, आदि के सख्त अनुपालन करने के लिए हम बाध्य बनते हैं। साथ-साथ इन आदेशों के अनुपालन सख्त रूप से सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी राजभाषा नियम, 1976 के उप नियम 12 के अनुसार कार्यालय प्रधान पर निर्भर रहते हैं। अतः मैं व्यक्तिगत रूप से, आपसे अपने कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रोन्नयन और प्रचार सुनिश्चित करने का अपील करता हूं।

हिंदी दिवस / हिंदी पखवाड़ा समारोह के इस पुनीत अवसर पर मेरी कामना यही है, आप सब अपना अधिकतम कार्यालयीन काम हिंदी में करके और विविध कार्यक्रमों के जरिए हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा मनाइए।

आप सब को हिंदी दिवस/ हिंदी पखवाड़ा समारोह की हार्दिक शुभकामनायें।

डॉ.आर.के.वत्स आई ए एस
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

सेवा में
सभी अधिकारी & कर्मचारी

एचएलएल में संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा 21.05.2018 को हॉटल लीला, कोवलम, तिरुवनंतपुरम में आयोजित निरीक्षण बैठक के अवसर पर एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड के राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन का निरीक्षण किया गया। इस बैठक में सम्माननीय सांसद श्री हुक्मदेव नारायण यादव, प्रो.चिंतामणी मालवीय, डॉ.ए.संपत्त, तीसरी उप समिति के अधिकारीगण, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के संयुक्त निदेशक श्रीमती नीहारिका सिंह तथा एचएलएल के उच्च कार्यपालकों ने भाग लिया। इस अवसर पर सम्माननीय सांसदों द्वारा कंपनी के राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में बढावा लाने की ओर आवश्यक मार्गनिर्देश भी दिये गये। इस बीच कंपनी द्वारा राजभाषा प्रदर्शिनी भी आयोजित की गयी।

एचएलएल जन सेवा के पथ से अग्रसर

हिंदलैब्स एमआरआई & सीटी स्कान सेंटर - सफलता के प्रथम वर्ष में

तिरुवनंतपुरम मेडिकल कॉलेज का हिंदलैब्स एमआरआई & सीटी स्कान सेंटर अपने प्रथम वर्ष का संचालन सफलतापूर्वक पूरा किया जा रहा है, जिसमें तिरुवनंतपुरम के अंतर और बाहर के हज़ारों रोगियों द्वारा हर हफ्ते में इस सुविधा का उपयोग किया जाता है। अब तक 5000 से अधिक मरीज़ों ने इस स्कान सुविधा से लाभ उठाया है, जिसका उद्घाटन सितंबर 2017 में किया गया। हिंदलैब्स अत्यंत किफायती लागत पर विश्वसनीय एमआरआई और सीटी स्कान सुविधाएं प्रदान करता है। 1.5 टेस्ला एमआरआई स्कान मशीन और 128 स्लाइस सहित सीटी स्कान के साथ सुसज्जित यह केंद्र मेडिकल कॉलेज अस्पताल, एसएटी, रीजनल कैंसर सेंटर (आरसीसी), श्री चित्र तिरुनॉल इंस्टीट्यूट फॉर मेडिकल साइंसेज़ एंड टेक्नोलॉजी (एससीटीआईएमएसटी) के रोगियों और अन्य बाहरी मरीज़ों को आवश्यक नैदानिक सेवाएं प्रदान करता है। वर्ष 2009 में संस्थापित, अपना नैदानिक सेवा प्रभाग 'हिंदलैब्स' के माध्यम से किफायती लागत पर गुणवत्ता नैदानिक सेवाओं के क्षेत्र में स्वयं एक विश्वसनीय ब्रांड बन गया है। कंपनी ने सार्वजनिक साझेदारी मॉडल के माध्यम से गुणवत्ता और ग्राहक के अनुकूल नैदानिक सेवाएं प्रदान करने में विशेषज्ञता साबित की है। हिंदलैब्स की एमआरआई स्कानिंग यूनिटें ने अब तक लगभग दो लाख रोगियों को लाभान्वित किया है। एचएलएल,सरकारी मेडिकल कॉलेज के सामने ट्रिडा कॉम्प्लेक्स में अत्याधुनिक-हिंदलैब्स डायग्नोस्टिक सेंटर और मल्टी स्पेशियालिटी क्लिनिक का भी प्रचालन करता है। लैब 24 घंटे और सार्वजनिक छुट्टियों के दौरान भी खुलता रहता है।

इस सेंटर में उपलब्ध सेवाएँ निम्नानुसार हैं -

जाँच	बाज़ार दर	हिंदलैब्स दर
युएसजी स्कानिंग	750/-	450/-
एको	1500/-	900/-
टीएमटी	1500/-	700/-
ग्लूकोज़	40/-	15/-
कोलेस्ट्रॉल	120/-	40/-
लिपिड प्रोफाइल	400/-	245/-
लिवर फंक्शन टेस्ट	400/-	240/-
रेनल फंक्शन टेस्ट	300/-	140/-
थाइरोइड फंक्शन टेस्ट	400/-	220/-

जाँच	बाज़ार दर	हिंदलैब्स दर
एमआरआई सिर/ मस्तिष्क	6500 - 7500	3500
एमआरआई -स्पाइन	6500 - 7500	3500
एमआरआई कंठ	6500 - 8000	3500
संधि - स्थलों का एमआरआई	6500 - 8000	3500
हाथ - पैर का एमआरआई	7000 -8000	3500

एमआरआई - पेट/ यूरोग्राम/ चेस्ट/ पेल्विस/एमआरसीपी	7000 - 9000	4000
एमआरए/एमआरवी/एमआरएस (पेरिफेरल)	8000 - 12000	4000
एमआरआई स्क्रीनिंग	2500 - 3000	1000

जाँच	बाज़ार दर	हिंदलैब्स दर
सी टी सिर	2000 - 2200	1100
सी टी स्कान गला	3500 - 4000	2000
सी टी स्कान पेल्विस	4500 - 5000	2000
सी टी स्कान चेस्ट	4000 - 4500	2000
एचआरसीटी (एकमात्र)	4500	1500
सी टी पेट	4500 - 6000	2000
सी टी स्पाइन (सेर्विकल/थोराज़िक/लंबर)	4000 - 6000	2000
सी टी स्कान हाथ- पैर	3500 - 6000	2000
सी टी एंजियोग्राफी - ब्रेइन	3500 - 6000	2000
सी टी पेरिफेरल एंजियोग्राम	6500 - 8000	2500

हिंदलैब्स के अद्वितीय स्वास्थ्य शिविरों से सैकडों लाभान्वित

विशेष अवसरों के दौरान, मेडिकल कॉलेज के हिंदलैब्स डायग्नोस्टिक सेंटर और एचएलएल क्लिनिक द्वारा विभिन्न स्वास्थ्य चेकअप कैंप आयोजित किये गये। असंख्य निवासियों ने इन शिविरों से लाभ उठाया है। अपने उद्यमों को अधिक लोगों तक पहूँचाने और इस क्षेत्र के लोगों को स्वास्थ्य रक्षा जागरूकता प्रदान करने के लिए हिंदलैब्स ने विभिन्न मुफ्त स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए। हिंदलैब्स ने 18-21 मई 2018 तक बहु विशेषता स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया। मरीज़ों के लिए 18 मई को मुफ्त बी पी चेकअप, बीएमए, आहार परामर्श, ब्लड शुगर, डायबटिक न्यूरोपथिक टेस्ट, ऑख जॉच आदि चलाये गये। कार्डियोलॉजी और डायबटिक के विशेषज्ञ डॉक्टरों ने शिविर का नेतृत्व किया। डॉ. सेल्विन नोरेन्हा ने दूसरे दिन के गैस्ट्रो शिविर का नेतृत्व किया और तीसरे दिन यानी 21 मई को मुफ्त फेटिल चिकित्सा चेकअप आयोजित किया गया, जिसका नेतृत्व डॉ. कार्तिका ने किया। इस कार्यक्रम के दौरान 50% की छूट पर अनोमली स्कैन का ऑफर दिया गया।

अक्षमता पठन कैंप

एचएलएल क्लिनिक द्वारा 23 जून 2018 को अक्षमता और बचपन एवं किशोरावस्था मनोवैज्ञानिक अव्यवस्था संबंधी पठन के लिए मुफ्त स्क्रीनिंग & जॉच कैंप आयोजित किया गया। इस शिविर का नेतृत्व प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डॉ. मात्यु पी. सकरिया द्वारा किया गया। ब्रिटिश साइकोलॉजिकल सोसाइटी का चार्टर्ड मनोवैज्ञानिक डॉ. मात्यु नैदानिक स्वास्थ्य मनोविज्ञान के क्षेत्रों में अपने विभिन्न सहयोगी और विशिष्ट अनुसंधान परियोजनाओं के लिए मशहूर है। डिस्लेक्सिया और एडी/एचडी जैसी अक्षमताएँ स्कूल जानेवाले विद्यार्थियों में बडी संख्या में प्रभावित किया जा रहा है। ये समस्याएं अध्यापक और माता- पिता द्वारा अक्सर पहचान नहीं कर पाते हैं। इन समस्याओं का प्रारंभिक पहचान और प्रभावी उपचार प्रक्रियाओं का कार्यान्वयन बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर दीर्घकालिक प्रतिकूल परिणामों के रोकथाम के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। इस शिविर में बच्चों में अकादमिक, सामाजिक, मनोविकार और व्यवहार संबंधी समस्याओं को पहचान करने के लिए अनेक मनोवैज्ञानिक जॉच आयोजित की गयी हैं। किसी भी तरह की अव्यवस्था के साथ पहचान की गई बच्चों को आगे के नैदानिक मूल्यांकन के लिए सिफारिश की गई। एचएलएल क्लिनिक से सुबह और शाम में गैस्ट्रोएंटेरोलॉजी, कार्डियोलॉजी, डायबैटोलॉजी, थायराइड, जनरल मेडिसिन, ईएनटी, पेडियाट्रिक्स, गाईनेकोलॉजी और पल्मोनोलॉजी सहित विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ डॉक्टरों का परामर्श मिलता है। कॉम्प्लेक्स में स्थित हिंदलैब्स प्रयोगशाला किफायती लागत पर नैदानिक सुविधाएं प्रदान करता है।

एचएमए में अल्पसंख्यक समुदाय के विद्यार्थियों के लिए मुफ्त नौकरी उन्मुख प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय, भारत सरकार, आईएल & एफएस - कौशल विकास निगम के सहयोग से ईसाई और मुस्लिम समुदायों के उम्मीदवारों के लिए मुफ्त नौकरी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया है। यह पाठ्यक्रम एचएलएल प्रबंधन अकादमी के कैंपस में आयोजित किया गया। प्लस टु परीक्षा में उत्तीर्ण हुए 18-35 आयु वर्ग के उम्मीदवारों को इस नर्सिंग सहायक पाठ्यक्रम में प्रवेश कराये जाते हैं । नर्सिंग सहायक, आम तौर पर पंजीकृत नर्स का समर्थन करता है और यह काम आवश्यकता आधारित, पूर्णकालिक या अंशकालिक होता है। नर्सिंग सहायकों को नर्सिंग होम, अस्पतालों, सेवानिवृत्ति और जेरियाट्रिक घरों में रोजगार का अवसर है। जीर्ण रोग संरक्षण और उत्तर-अस्पताल संरक्षण के लिए उनकी सेवाओं की जरूरत है। पाठ्यक्रम की अवधि तीन महीने होगी। पाठ्यक्रम की सफल समाप्ति के बाद छात्र - छात्राओं को सरकारी प्रमाणपत्र और मोनिटरी पुरस्कार प्रदान किया जाता है। नौकरी नियुक्ति (जॉब प्लेसमेंट) की सहायता एक और मूल्य संवर्धन है।

असहाय प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए एचएलएल का समर्थन

118 विद्यार्थियों को 'प्रतीक्षा' छात्रवृत्ति, प्रतीक्षा 4 वां वर्ष के कगार पर

एचएलएल लाइफ़केयर लिमिटेड ने अपने सीएसआर पहल प्रतीक्षा धर्मार्थ सोसाइटी द्वारा संस्थापित प्रतीक्षा छात्रवृत्ति, अकादमिक वर्ष 2017-18 के लिए वृत्तिक एवं तकनीकी पाठ्यक्रमों में प्रवेश पाने के लिए इच्छुक अकादमिक तौर पर उत्कृष्ट 26 विद्यार्थियों को वितरित की हैं। सीएसआर पहल बीपीएल श्रेणी के छात्र - छात्राओं का समर्थन करने के लिए है। श्री ई.ए. सुब्रमण्यन, निदेशक (तकनीकी एवं प्रचालन) द्वारा 31 जनवरी 2018 को एचएलएल कॉर्पोरेट मुख्यालय में आयोजित समारोह में छात्रवृत्ति वितरित की गयी। श्री ई.ए. सुब्रमण्यन ने कहा - एचएलएल को राजधानी शहर से 146 छात्रवृत्ति आवोदन प्राप्त हुआ, जिनमें से हमने उनकी श्रेष्ठता के आधार पर 26 छात्रों को चुन लिया। मार्च 2014 में पंजीकृत, प्रतीक्षा धर्मार्थ सोसाइटी तिरुवनंतपुरम और बेलगाम जिलों के विद्यार्थियों को वित्तीय सहायता प्रदान कर रही है। एचएलएल के विनिर्माण यूनिट बेलगाम, कर्नाटका में प्राप्त 23 आवेदनों में से 10 छात्रों को चुन लिया गया। प्रतीक्षा छात्रवृत्ति के लिए लाभार्थियों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है। तिरुवनंतपुरम में, यह 2014-2015 के सात विद्यार्थियों से 2015-2016 में 17 तक बढ गया। 2016-2017 में यह 28 तक बढ गया। 30 विद्यार्थियों के साथ 2014 में प्रारंभित छात्रवृत्ति अब 118 विद्यार्थियों को प्रायोजित करती है, जिनमें 78 तिरुवनंतपुरम से और 40 बेलगाम से हैं। पाँच चयनित एमबीबीएस विद्यार्थियों को रु.30,000 का वार्षिक अनुदान दिया जाएगा, इंजीनियरिंग और बी-फार्मा पढनेवाले विद्यार्थियों को रु. 20,000 दिया जाएगा और डिप्लोमा और नर्सिंग पाठ्यक्रम पढनेवालों को रु.10,000 मिलेगा। आईटीआई पढनेवाले विद्यार्थियों को, अपना पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा करने तक, प्रतिवर्ष रु. 5000 मिलेगा।

एचएलएल में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

एचएलएल लाइफ़केयर लिमिटेड (एचएलएल) में 08 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। एचएलएल पेरूरकडा फैक्टरी में आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करके निर्भया राज्य समन्वयक श्रीमती निशांदिनी, आई पी एस ने कहा कि इस समारोह का उद्देश्य ही पुरुषों पर प्रभुत्व के लिए प्रयास करने के बजाय लिंग समानता की अवधारणा को सुदृढ करना है। उन्होंने जोडा कि यहाँ 'महिलाओं की समानता' शब्द का बडे पैमाने पर दुरुपयोग कर रहा है और इस संबंध में बहुत शिकायतें आ रही हैं।

श्री वी. कुट्टप्पन पिल्लै, यूनिट मुख्य ने समारोह की अध्यक्षता की। श्रीमती एम. श्रीकुमारी, सचिव, महिलामंदिरम, पूजप्पुरा; श्रीमती वी. सरस्वती देवी, सह उपाध्यक्ष, मानव संसाधन, एचएलएल और डॉ.वी.के. जयश्री, उप महा प्रबंधक, हिंदी विभाग, एचएलएल ने भाग लिया।

डॉ. गीता शर्मा, एचएलएल के नये निदेशक (वित्त)

डॉ. गीता शर्मा ने 01 अगस्त 2018 को निदेशक (वित्त) के रूप में एचएलएल में कार्यभार ग्रहण कर लिया। उन्हें इस वर्ष फरवरी में सार्वजनिक उद्यम चयन बोर्ड (पीएसईबी) द्वारा नियुक्त किया गया। एचएलएल में शामिल होने से पहले, वे स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया (सेइल) में उप महा प्रबंधक के रूप में काम कर रही थीं।

एचएलएल - राजभाषा कार्यान्वयन में प्रतिबद्ध

एचएलएल में हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाडा समारोह - 2018

हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी भारत में मात्र नहीं समूचे विश्व के जनमानस में विराजित भाषा है और आज इसे राजभाषा, संपर्कभाषा, बाज़ारी भाषा, विश्वभाषा एवं गूगिल की भाषा की गरिमा भी प्राप्त हुई है। इसलिए संविधान सभा द्वारा हिंदी भाषा को भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकृत दिवस, यानी 14 सितंबर 1949 की यादगार में भारत के सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों, निगमों, बैंकों एवं अन्य गैर सरकारी संगठनों में 14 सितंबर को हिंदी दिवस और उसके पहले या बाद में हिंदी पखवाडा मनाते हैं। एचएलएल के निगमित मुख्यालय एवं अन्य सभी यूनिटों में इस बीच हिंदी पखवाडा धूमधाम से मनाया गया है।

एचएलएल के निगमित मुख्यालय एवं पंजीकृत कार्यालय के अक्षया हॉल में 14 सितंबर 2018, अपराह्न 3 बजे को आयोजित हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाडा समारोह का उद्घाटन एचएलएल के निदेशक (वित्त) डॉ.गीता शर्मा द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि प्रत्येक राष्ट्र के लोगों को अपनी राष्ट्रभाषा में बातें करते समय अपनापन का भाव महसूस होता है। हिंदी भाषा में बातें करते समय हमें भी ऐसा होना चाहिए। साथ ही उन्होंने सभी से हिंदी में भी कार्य करने की उम्मीद की।

आगे, निदेशक (विपणन) श्री टी.राजशेखर और कंपनी सचिव एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री पी.श्रीकुमार ने आशीर्वाद भाषण दिया। सम्माननीय केंद्र गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह के हिंदी दिवस का संदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) श्री के.विनयकुमार ने पढा। उप महा प्रबंधक (हिंदी) डॉ. वी. के. जयश्री और श्री रमेश मोहन.आर.पी, प्रबंधक (मानव संसाधन), एचएलएल - हाइट्स ने क्रमशः स्वागत एवं कृतज्ञता का काम संभाला। इस समारोह का संचालन कार्य डॉ.सुरेष कुमार.आर, उप प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा किया गया।

हिंदी प्रतियोगिताएँ

एचएलएल के हिंदी पखवाड़ा समारोह की अवधि में एचएलएल की पेरूरकड़ा फैक्टरी में 20.09.2018

को कंपनी के कर्मचारियों के बच्चों के लिए (कॉलेज, हाई स्कूल, मिडिल स्कूल, प्राइमरी स्कूल और पाँच वर्षों के कम आयु के बच्चों के लिए अलग तौर पर) और 21.09.2018 को कंपनी के कर्मचारियों के लिए हिंदी भाषण, हिंदी निबंध लेख, हिंदी फिल्मी गीत, हिंदी देशभक्ति गीत, अनुवाद, श्रुतलेख, सुलेख, प्रशासनिक शब्दावली, हिंदी लघु कहानी, टिप्पण और आलेखन, हिंदी में प्रश्नोत्तरी, हिंदी वक्तृता, हिंदी समाचार वाचन, हिंदी कविता पाठ, तस्वीर क्या बोलती है जैसी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं। इन प्रतियोगिताओं में बच्चों एवं कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी हुई।

आगे, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों के हिंदी में काम करने की रुचि और भी बढाने की ओर 24.09.2018 को निगमित मुख्यालय के अक्षया हॉल में आयोजित हिंदी प्रतियोगिता में सभी सदस्यों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

राजभाषा कार्यशाला

एचएलएल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का ज्ञान अद्यतन करते हुए उनका सरकारी काम आसानी से हिंदी में भी करने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से हम कंपनी में समय - समय पर राजभाषा कार्यशाला आयोजित करते हैं। इस क्रम में 27.06.2018 को आयोजित कंपनी के अधिकारियों के लिए तकनीकी प्रशिक्षण में 25 अधिकारियों ने लाभ उठाया। आगे, 20 अगस्त 2018 को आयोजित अधिकारियों के लिए प्रौद्योगिकी पर प्रशिक्षण में 13 अधिकारियों की उपस्थिति हुई। इन कार्यशालाओं से एसबीआई के मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री अनिल कुमार यूनिकोड फॅंट, इन्सक्रिप्टकीबोर्ड, इंटरनेट में उपलब्ध विभिन्न हिंदी टूल्स, गूगिल कन्वर्टर, गूगिल हिंदी अनुवाद, गूगिल इंडिक, हिंदी वॉयस टाइपिंग तथा फोटो अनुवाद के बारे में आवश्यक प्रशिक्षण देते हुए मोबाइल के ज़रिए उन्हें अभ्यास कराया गया।

बाद में, हिंदी पखवाडा समारोह के दौरान कंपनी के फैक्टरी स्टॉफ के लिए राजभाषा नीति पर जागरूकता कार्यक्रम (18.09.2018), अधिकारियों के लिए राजभाषा नीति पर जागरूकता कार्यक्रम और डिजिटल आप्लिकेशन पर प्रशिक्षण (19.09.2018) आयोजित किया गया, जिनमें क्रमशः 21, 16 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिंदी वाक्-पटुता कार्यक्रम

कंपनी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मन में हिंदी का परिवेश लाने और हिंदी में भाषण देने का झिझक दूर करने के लक्ष्य से एचएलएल की पेरूरकडा फैक्टरी में 29 सितंबर 2018 को "एचएलएल को एक लाभदायक कंपनी बनाने के लिए बदलाव कार्यनीतियाँ" विषय पर आयोजित किये गये वाक्-पटुता कार्यक्रम में कंपनी के विभिन्न यूनिटों के स्टॉफों की सक्रिय भागीदारी हुई। एचएलएल निगमित मुख्यालय के उप प्रबंधक श्री रोषन हरिमोहन, एचएलएल पेरूरकडा फैक्ट री के उप महा प्रबंधक श्री वेणुगोपाल.एस और एचएलएल पेरूरकडा फैक्टरी के वरिष्ठ अधिकारी श्रीमती रेचल जेकब क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान के लिए हकदार बन गये।

राजभाषा हिंदी की कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएँ

1. चौदह सितंबर उन्नीस सौ उनचास (14.09.1949) को देवनागरी हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अपनाने की स्वीकृति प्राप्त हुई।
2. भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा से संबंधित व्यवस्था दी गई है।
3. राजभाषा अधिनियम 1963 में पारित किया गया।
4. संघ के शासकीय प्रयोजनों में देवनागरी के प्रयोग के लिए भारत सरकार ने 1976 में राजभाषा नियम 1976 पारित किया गया।
5. राजभाषा नियम 1976 के उप नियम 12 के अनुसार राजभाषा हिंदी संबंधी उपबंधों के अधीन जारी निर्देशों के अनुपालन का दायित्व प्रशासनिक प्रधान या कार्यालय मुख्य का होता है।
6. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अधीन आनेवाले 14 दस्तावेज़ 100% द्विभाषी में जारी किया जाना चाहिए।
7. संसदीय समिति में लोकसभा के 20 तथा राज्य सभा के 10 सदस्य सम्मिलित होंगे।
8. संविधान के अनुच्छेद 348 (1) के अंतर्गत सर्वोच्च न्यायालय तथा न्यायालय में कार्यवाही अंग्रेज़ी में की जाएगी।
9. राजभाषा अधिनियम में केवल 9 धारा ही है।
10. राजभाषा नियमावली 1976 में केवल 12 पैरा है।
11. राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय के अधीन है।
12. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें वर्ष में चार बार आयोजित की जाती हैं।
13. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें वर्ष में दो बार आयोजित की जाती हैं।
14. वर्तमान वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार 30 प्रतिशत टिप्पण हिंदी में किया जाना है।
15. भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर नोटों में हिंदी में अपना हस्ताक्षर करते हैं।
16. उच्च स्तरीय सरकारी बैठकों के कार्यवृत्त, कार्यसूची, कार्यक्रम आदि द्विभाषी में तैयार किए जाने हैं।
17. राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अनुसार सभी परिपत्र द्विभाषी में हिंदी और अंग्रेज़ी में जारी करना अनिवार्य है।
18. कंप्यूटर में अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद करने के लिए राजभाषा विभाग,गृह मंत्रालय द्वारा सी-डाक के ज़रिए बनाए गए सहायक सोफ्टवेयर का नाम है मंत्रा।

एचएलएल - कनगला फैक्टरी

कंपनी की कनगला यूनिट में हर वर्ष की तरह विद्यमान वर्ष में भी हिंदी पखवाड़ा 1 से 15 सितंबर 2018 तक आयोजित किया गया। कनगला फैक्टरी के शंकरानंद हॉल में 1 सितंबर 2018, पूर्वाह्न 11 बजे को आयोजित हिंदी पखवाड़ा समारोह का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलित करके श्री जी.सतीशकुमार, वरिष्ठ उपाध्यक्ष (प्रचालन) द्वारा किया गया। उन्होंने हिंदी भाषा कार्यालय में पनपने की आवश्यकता पर ज़ोर देते हुए यूनिट के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपना काम हिंदी में भी करके कंपनी के राजभाषा कार्यान्वयन में प्रगति लाने के श्रम का एक हिस्सा बनाने की कामना की। साथ ही उन्होंने कर्मचारियों से हिंदी पखवाडा समारोह के दौरान आयोजित विविध हिंदी कार्यकलापों में उत्साह के साथ भाग लेने का आग्रह भी व्यक्त किया।

इस अवसर पर श्री वी.जी.राजपूत, संयुक्त महा प्रबंधक (अभियांत्रिकी), श्री आर.बी. भोसले, उप महा प्रबंधक (बिक्री), श्री बी.गुरुराजा, उप महा प्रबंधक (कंडोम उत्पादन) एवं श्री वीरेंद्र.एच, प्रबंधक (मानव संसाधन) उपस्थित थे। मंचासीन वरिष्ठ अधिकारियों के अतिरिक्त यूनियन पदाधिकारी एवं महिला कर्मचारियों द्वारा भी भद्रदीप प्रज्ज्वलित किये गये।

बाद में, श्री जी.सतीशकुमार, वरिष्ठ उपाध्यक्ष (प्रचालन) ने एसएसएलसी/ सीबीएससी, प्लस टु परीक्षाओं में हिंदी विषय में 90 % से ज़्यादा अंक प्राप्त कंपनी के कर्मचारियों के बच्चों को नकद पुरस्कार वितरित किया। आगे अगस्त 2018 के दौरान कंपनी की विजय दिवस योजना के तहत विजयी कर्मचारियों को 'कॉफी मग' से पुरस्कृत किया गया।

श्री आर.बी. भोसले, उप महा प्रबंधक (बिक्री) और श्री बी.गुरुराजा, उप महा प्रबंधक (कंडोम उत्पादन) ने क्रमशः स्वागत एवं धन्यवाद का काम संभाला। इस समारोह के प्रारंभ में कंपनी का कॉर्पोरेट गीत था और बीच - बीच में बजाये 'हिंदी बिंदी' गीत वातावरण को हिंदीमय बनाने के लिए सहायक बन गया।

हिंदी प्रतियोगिताएं

यूनिट के कर्मचारियों के लिए आयोजित हिंदी भाषण, हिंदी टिप्पण, आलेखन एवं अनुवाद, विज्ञापन बनाना, हिंदी गीत गायन, हिंदी अंताक्षरी, हिंदी वाद-विवाद आदि प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या में कर्मचारियों ने भाग लिया। आगे, महाविद्यालय स्तर, हाईस्कूल स्तर, मिडिल स्कूल स्तर एवं प्राथमिक स्तर तक के कंपनी के कर्मचारियों के बच्चों के लिए हिंदी निबंध लेखन, हिंदी भाषण, हिंदी अनुवाद, हिंदी सुलेखन एवं हिंदी सस्वर पाठ प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं और इसमें बच्चों की खूब भागीदारी हुई।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) के कार्यकलाप

नराकास (उपक्रम) की सातवीं बैठक

नराकास (उपक्रम) के वर्ष 2018-19 की सातवीं बैठक 31.07.2018 को एचएलएल कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास केंद्र, आक्कुलम में आयोजित की गयी। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक,एचएलएल एवं अध्यक्ष नराकास (उपक्रम), डॉ.आर.के.वत्स आई ए एस ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि केरल के लोग हिंदी भाषा आसानी से समझते और सीखते हैं तथा हिंदी में बोलते भी हैं। बाज़ार के लोग मात्र नहीं मंदिर के पुजारी भी बेहिचक से हिंदी में बात करते हैं। यहाँ का वातावरण इसके लिए अनुकूल है, इसकी प्रगति के लिए हमें बहुत कम परिश्रम करना चाहिए। यानी केरल में हिंदी आसानी से फूलेगी और फलेगी। उन्होंने जोडा कि गत वर्ष में टोलिक (उपक्रम) के नेतृत्व में आयोजित हिंदी गतिविधियों पर सदस्य कार्यालयों के अध्यक्ष एवं हिंदी कार्मिकों का खूब सहयोग एवं समर्थन मिला है, जिससे हम सभी कार्यक्रम सही तरीके से आयोजित करने में सक्षम बन गये।

आगे, डॉ. आर.के.वत्स आई ए एस, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एचएलएल एवं अध्यक्ष नराकास (उपक्रम) ने नराकास द्वारा आयोजित सदस्य कार्यालयों के बच्चों के लिए आयोजित हिंदी

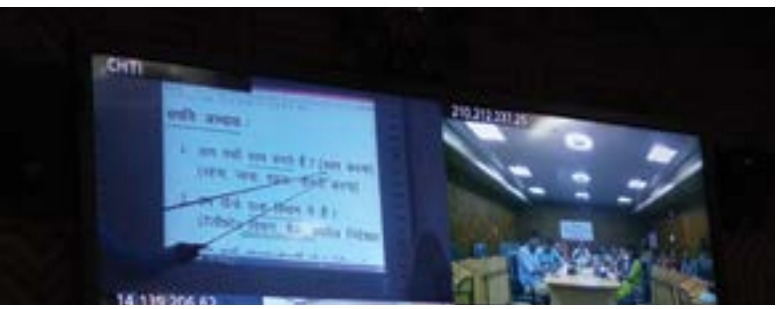

प्रतियोगिताओं और भारतीय भाषा कवि सम्मेलन के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये।

श्री पी.श्रीकुमार, कंपनी सचिव एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष (सीएएस), एचएलएल और श्री पवन कुमार सिंह, प्रबंधक (विधिक एवं राजभाषा), भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण द्वारा क्रमशः स्वागत एवं कृतज्ञता अदा किया गया। डॉ.वी.के. जयश्री, उप महा प्रबंधक (हिंदी) एवं सदस्य सचिव, नराकास (उपक्रम) द्वारा कार्यसूची मदों को प्रस्तुत किया गया।

बाद में, डॉ.सुनीता देवी यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोच्चि ने सदस्य कार्यालयों की छमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में प्रत्येक कार्यालय की उपलब्धियों एवं कमियों के बारे में कार्यालयों को अवगत कराया।

सचिवालयीन बैठकें - प्रचलित वर्ष के राजभाषा कार्यकलापों की समय सारिणी तैयार करने के लिए 04.06.2018 को और 11-09-2018 को नराकास के सदस्य सचिव की नेतृत्व में सचिवालयीन बैठक आयोजित की गयी। इस अवसर पर नराकास के सदस्य कार्यालयों के हिंदी कार्मिक एवं हिंदी नोडल अधिकारियों ने भाग लिया।

यूनिकोड और तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने संबंधी प्रशिक्षण - नराकास के सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों को राजभाषा के अत्याधुनिक तकनॉलजी के प्रति अद्यतन करने तथा तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने संबंधी शंकायें दूर करने के लिए 22.06.2018 को एचएलएल पेरूरकडा फैक्टरी में यूनिकोड और तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने संबंधी प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 15 कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रथम सत्र में, श्रीमती ज्योतिप्रभा.जे, अधिकारी (अनुवाद) और दूसरे सत्र में श्री सामराज, सलाहकार (राजभाषा), सी - डैक द्वारा क्लास चलाया गया।

राजभाषा नीति पर अभिमुखीकरण कार्यक्रम - सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों को राजभाषा नीति के बारे में आवश्यक जानकारी प्रदान करते हुए हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित करने की ओर 16.08.2018 को एचएलएल पेरूरकडा फैक्टरी में आयोजित राजभाषा नीति पर अभिमुखीकरण कार्यक्रम में 24 अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भागीदारी हुई। श्रीमती विशालाक्षी सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (राजभाषा) सीपीएमजी एवं सदस्य सचिव (टोलिक) ने क्लास का कार्य संभाला।

हिंदी भाषा प्रशिक्षण

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा तिरुवनंतपुरम के नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के हिंदी न जानने वाले कर्मचारियों के लिए वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से पाँच दिवसीय हिंदी भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम 24 - 28 सितंबर 2018 तक एचएलएल, तिरुवनंतपुरम के निगमित मुख्यालय के अक्षया हॉल में आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से टोलिक के सदस्य कार्यालयों के 45 कर्मचारियों ने लाभ उठाया। पहली बार आयोजित इस नवीनतम प्रशिक्षण सुविधा सभी को एक नया अनुभव था।

राजभाषा सेमिनार में पुरस्कृत लेख

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में राजभाषा हिंदी की भूमिका

सिमि एस
शोध छात्र
हिंदी विभाग कार्यवट्टम

इस दुनिया में अगर कोई एक चीज़ है जो कभी नहीं बदलती तो वह है - परिवर्तन। अलका जी का यह मत बहुत ही सार्थक है। हर ज़माने में विश्व के हर देश, भाषा, साहित्य, संस्कार आदि सभी क्षेत्रों में किसी न किसी रूप से परिवर्तन होता रहता है। देश हो या भाषा उसकी उन्नति के लिए परिवर्तन आवश्यक ही है। विज्ञापन के इस युग में सर्वाधिक चर्चित शब्द है "भूमंडलीकरण या वैश्वीकरण"। इस शब्द से "सब जन हिताय, सब जन सुखाय" की ध्वनि उभर आता है जो भारत का उदात्त एवं प्राचीन दर्शन "वसुदैव कुटुंबकम" से साम्य रखता है। पर सच्चाई यह है कि इसका निहितार्थ भारतीय दर्शन से बिलकुल भिन्न है। भूमंडलीकरण में बाज़ार एक महत्वपूर्ण एवं निर्णायक हिस्सा है। बाज़ार न केवल प्रत्येक देश की संस्कृति, जीवन-शैली आदि पर बदलाव लाया बल्कि भाषा में भी। भूमंडलीकरण ने भौतिक जगत की दूरियों को ज़रूर मिटाया है। वैश्वीकरण को लेकर भाषा के परिप्रेक्ष्य में यही बात हो रही है कि जिन भाषाओं को आधुनिक ढंगों का उपयोग करने की क्षमता है उसका विकास हो रहा है। भूमंडलीकरण की दृष्टि से राजभाषा हिंदी पर विचार करने के लिए पहले राजभाषा के रूप में हिंदी के विकास पर दृष्टि डालना उचित होगा।

राजभाषा का अर्थ है वह भाषा जो राजकाज, प्रशासन तंत्र के कार्य के संपादन की, गतिविधि की भाषा हो। हर देश की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में सार्वदेशिक स्वरूप रखनेवाली एक भाषा होती है, वही राजभाषा है। भारत में 1949 सितंबर 14 को संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी को राजभाषा की स्वीकृति मिली। अतः वह दिन हम हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं। 1950 जनवरी 26 को यह चालू हो गया। तब से लेकर हिंदी के इस मानक रूप का विकास शुरू हुआ। एक शब्द के लिए एक से अधिक अर्थ के प्रयोग होने से राजभाषा के विकास में बाधा डाल सकता था। अतः कार्यालयों में प्रयुक्त शब्दों के लिए एक मानक अर्थ का होना आवश्यक था। इस लक्ष्य को हासिल करने के उद्देश्य से 1955 में राजभाषा आयोग तथा 1957 में संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया गया था।

हिंदी केंद्र की राजभाषा बनी 6 दशक से अधिक हो चुके हैं। फिर भी उच्च न्यायालयों में इसका प्रयोग कुछ दिन पहले ही शुरू हुआ है। हिंदी संविधान द्वारा स्वीकृत राजभाषा है। गृह मंत्रालय की राजभाषा समिति की ओर से इस पर ज़ोर दी जाती है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी में अधिक से अधिक काम होना चाहिए। इसलिए ऐसे अधिकारियों को सरकारी कामकाज में हिंदी में काम करने और हिंदी को प्रोत्साहित करने के लिए मज़बूरन कुछ योजनाएँ बनानी पड़ती है। यह राजभाषा के विकास में सहायक भी है।

किसी भी भाषा का वैश्विक स्वरूप उस समय प्राप्त होता है जब यह अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रयोग में लाई जाती है। इसी के साथ उसका संसार के कुछ देशों में वहाँ के सरकारी काम-काज में भी प्रयोग किया जाता है। इसी दृष्टि से देखे तो हिंदी का वैश्विक रूप से पहली बार पदार्पण गाँधीजी द्वारा 1936 में संस्थापित राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति द्वारा आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन से मानना उचित होगा। पहला विश्व हिंदी सम्मेलन 1975 जनवरी 10 से 13 तक था। अतः जनवरी 10 को विश्व हिंदी दिवस के रूप में स्वीकृति मिली।

संयुक्त राष्ट्र संघ इस समय का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और स्वीकृत अंतर्राष्ट्रीय मंच है। किंतु हिंदी आज भी वहाँ की आधिकारिक भाषा नहीं है। अब तक दस विश्व हिंदी सम्मेलन संपन्न हो चुके हैं और ग्यारहवीं इसी साल मोरीशस में संपन्न हुआ है। इन सम्मेलनों के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र संघ में राजभाषा हिंदी को मान्यता दिलाने का संकल्प निरंतर हो रहा है।

विश्व में हिंदी भाषियों का दूसरा स्थान है। मोरीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद आदि देशों में लगभग डेढ सौ वर्षों से हिंदी विद्यमान है और वहाँ भारतवंशियों तथा हिंदी भाषियों की बड़ी संख्या है। इन देशों में पर्याप्त मात्रा में साहित्य सृजन भी हो रहा है। फिर भी वहाँ सरकारी कामकाज में हिंदी का अब तक कोई महत्व नहीं। आज भूमंडलीकरण के बोलवाला से देशों के बीच की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भाषिक दीवारें टूट रही है। इस दृष्टि से इन देशों में हिंदी के राजभाषा स्वरूप के विकसित होने की अपार संभावनाएँ निहित हैं।

वैश्वीकरण की इस दुनिया में हिंदी का विकास तीव्र गति से हो रहा है। तकनीकी से जुडे हिंदी कंप्यूटर की विभिन्न विधाओं में अपनी उपस्थिति को दर्ज कराते हुए आगे बढ़ रही है। जहाँ तक हिंदी भाषा या रचनात्मक साहित्य की बात है, वह गुणवत्ता एवं मात्रा की दृष्टि से विश्वस्तरीय और समृद्ध है। किंतु विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में इन सभी भारतीय भाषाओं की उपलब्धि बहुत उल्लेखनीय नहीं कही जा सकती। भारत सरकार तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने लगभग 8 लाख शब्दों को पारिभाषिक शब्दों के रूप में जुटाया है। दुर्भाग्य की बात यह है कि इतना समृद्ध पारिभाषिक शब्दावली के होने पर भी सरकार से जुडे विभिन्न कार्यालयों में अभी भी हिंदी का प्रयोग नाम मात्र है तथा विज्ञान या तकनीकी संबंधी पुस्तकों की रचना भी बहुत कम है। तेज़ी से बदलते हुए संसार के सामाजिक और सांस्कृतिक स्वरूप व परस्पर आदान-प्रदान के फलस्वरूप काफी गहराई तक प्रभावित हो रही भारतीय संस्कृति के समस्त तत्वों की अभिव्यक्ति हेतु हिंदी भाषा में विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित विषयों की अभिव्यक्ति आज अनिवार्य है।

साहित्य व बोलचाल की भाषा के रूप में हिंदी को ज़रूर स्थान मिला है। पर वैश्विक संदर्भ में इतने देशों में भारतवासियों के बसे होने और इतने विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाने के बावजूद भी राजभाषा हिंदी की स्थिति पूर्णतः संतोषजनक नहीं है। इसका एक कारण यह है कि विदेशों में स्थित भारतीय दूतावासों के अधिकारी सारा कामकाज हिंदी की वजह अंग्रेज़ी में करते हैं। दूतावासों में भारतीय भाषाओं की पुस्तकों, समाचार पत्रों और पत्र-पत्रिकाओं की गिनती भी नगण्य होती है। यदि सरकार द्वारा इस पर उचित कार्रवाई की जाए तो वैश्विक स्तर पर राजभाषा हिंदी को उचित स्थान मिलेंगे।

हिंदी जैसी भाषा के प्रयोग में एक कठिनाई यह थी कि कंप्यूटर या इंटरनेट में इसके प्रयोग के लिए उचित फॉण्ट का अभाव। लेकिन आजकल यूनिकोड की उपलब्धि से हिंदी फॉण्ट को एकरूपता मिला है। पत्र-पत्रिकाओं ने तो यूनिकोड को अपना लिया है, पर विभिन्न बैंकों, कार्यालयों आदि में अभी भी इसे पूरी तरह अपनाया जाना बाकी है।

युनेस्को की एक रपट के अनुसार संप्रति विश्व के लगभग 137 देशों में हिंदी भाषा विद्यमान है। हिंदी भाषा जाननेवालों की कुल संख्या अनुमानतः सौ करोड़ है। यानी विश्व में सबसे अधिक बोली जानेवाली दूसरी भाषा है हिंदी। अतः इन देशों में उनकी राजभाषा के साथ हिंदी को भी उचित स्थान मिल जाए तो विश्व क्षेत्र में हिंदी का आदर और भी बढ़ जाएंगे।

1990 में जब सिंगपुर सरकार ने हिंदी सोसाइटी की स्थापना की तो सरकार ने हिंदी को दूसरी ऐसी भाषा घोषित कर दिया जिसे विद्यार्थी सबसे ज़्यादा सीखना चाहते हैं। राजभाषा हिंदी की प्रगति में यह भी आशाजनक बात है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि राजभाषा हिंदी तो अपनी विकास यात्रा निरंतर जारी रखने के प्रयास में है। यह निश्चित है कि वैश्विक स्तर पर राजभाषा हिंदी की स्वीकृति तब तक नहीं होगी जब तक राष्ट्रीय स्तर पर उसकी व्यापक स्वीकृति नहीं होगी। राष्ट्रीय स्तर पर उसकी स्वीकृति तभी होगी जब अन्य भारतीय भाषाएँ उसे इस रूप में स्वीकार करेंगी। आशा करती हूँ कि जिन देशों में भी भारतवंशी बड़ी मात्रा में रहते हैं, वहाँ सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग किया जाए। इससे हिंदी का वैश्विक रूप उभरेगा और संयुक्त राष्ट्र संघ में वह एक आधिकारिक भाषा बने इसका मार्ग भी प्रशस्त होगा।

सोच लो, मंज़िल अभी भी दूर है
हथियार हमारे पास है।
मन में विश्वास और चिंता में आग
हो तो कुछ भी असंभव नहीं।
हम साथ चलें, बढ़कर चलें
राजभाषा हिंदी की शान बढ़ाएँ।

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में राजभाषा हिंदी की भूमिका

आर्द्रा .आर .एस

एम ए हिंदी
श्रीशंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय
क्षेत्रीय केंद्र, तिरुवनंतपुरम

वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है। इसे एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजन है। वैश्वीकरण का उपयोग अक्सर आर्थिक वैश्वीकरण के संदर्भ में किया जाता है, अर्थात् व्यापार, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, पूँजी प्रवाह, प्रवास और प्रौद्योगिकी के प्रसार के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में एकीकरण।

मानव समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ कहा गया है, क्योंकि इसके पास मस्तिष्क है और इस मस्तिष्क में उपजते हैं विचार। इन विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए माध्यम की ज़रूरत होती है। हालांकि यों तो मौन भी मुखर होता है किन्तु अभिव्यक्ति के स्तर पर भाषा ही वह माध्यम है जिससे विचार, अनुभव और भाव मूर्त रूप धारण करते हैं। भाषा वस्तुतः व्यक्ति मात्र की पीड़ाओं, उल्लासों और संवेदनाओं का एक अनुवाद है। भाषा वैचारिक और मानस पटल पर उद्वेलित होने वाली भावनाओं का प्रतिबिंब है। विश्व में कई भाषाएं बोली जाती हैं और संभवतः सभी भाषाएं आपस में संवेदना के स्तर पर जुड़ाव रखती है परंतु हिंदी भाषा अपनी सहजता और लचीलापन के कारण संवेदनशीलता की इस विशेषता के अत्यंत निकट है ।

आज हम जिस समृद्ध हिंदी को बोलते और अभिव्यक्त करते हैं उसके विकास की भी अपनी कहानी है। शैशवावस्था में हिंदी अपभ्रंश के बहुत निकट थी। 1000-1100 ई. के आसपास तक हिंदी का कुछ ऐसा ही मिला जुला रूप था। उस समय इसका व्याकरण भी अपभ्रंश का ही प्रतिरूप था, अनेक परिवर्तनों को संजोए हुए, अवधी और ब्रज के सान्निध्य 1500 ई. तक आते आते हिंदी स्वतंत्र रूप से अपनी पहचान बनाकर वर्तमान स्वरूप में आने लगी।

वर्तमान में हिंदी देश के मानचित्र पर व्यापक फलक पर छायी हुई जनभाषा है यह न केवल संपर्क भाषा के रूप में देश को एक सूत्र में बांधे रखने का महती काम कर रही है, साथ ही अपने लचीलापन व लोकप्रियता तथा सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण रखने की क्षमता के कारण ही हिंदी का राजभाषा का दर्जा कायम है, हालांकि इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा दिए जाने की मांग हर कहीं से उठती रही है, पर क्षेत्रीयता के चलते अभी यह स्थिति नहीं बन पाई है। आज हिंदी व्यापार, ज्ञान-विज्ञान, अध्यात्म और संस्कृति के विभिन्न आयामों की छटा को समूचे विश्व में प्रसारित कर अपनी पहचान का दायरा भी बढ़ी रही है। वर्तमान में विश्व के 33 देशों में हिंदी भाषा बोली एवं समझी जाती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय हिंदी विश्व में तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा थी परन्तु आज यह दूसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा का दर्जा प्राप्त कर चुकी है।

हिंदी भाषा का साहित्य भी आज विविध विधाओं के माध्यम से वैश्विक फलक पर अपना स्थान बन रहा है। उत्कृष्ट लेखन व हिंदीतर श्रेष्ठ साहित्य का अनुवाद इस भाषा को मांझ कर इसके वैश्विक स्वरूप को प्रभावी रूप से प्रस्तुत कर सकता है, जो कि भूमंडलीकरण के इस दौर में परम आवश्यक है। आज हिंदी के प्रचार में पत्र पत्रिकाओं के साथ साप्ताहिक, पाक्षिक एवं मासिक पत्र भी अपनी महती भूमिका निभा रहे हैं, लेकिन हिंदी को बढ़ावा देकर सहारा बन रहे इन माध्यमों से ही हिंदी को सबसे बड़ा खतरा भी है। यह हिंदी की लोकप्रियता का ही प्रमाण है कि आज संचार के अत्याधुनिक साधनों - मोबाइल और इंटरनेट, जहाँ अंग्रेज़ी का एकछत्र राज्य हुआ करता था वहाँ भी यह भाषा विस्तार प्राप्त कर रही है। आज इन यंत्रों पर देवनागरी टंकण हेतु अनेक एप्स उपलब्ध हैं जिससे हिंदी लोकप्रिय हो रही हैं। तकनीकविज्ञों के अनुसार हिंदी कंप्यूटर इत्यादि के लिए संस्कृत के पश्चात् सर्वश्रेष्ठ भाषा माध्यम है और इसका कारण इसकी ध्वन्यात्मक प्रकृति है।

वर्तमान समय में हिंदी भाषा एक संक्रमण के दौर से गुजर रही है। यह संक्रमण भाषाई तो है ही साथ ही सांस्कृतिक भी है। आज हिंदी पर भूमंडलीकरण अपना व्यापक प्रभाव डाल रहा है, ऐतिहासिक दृष्टि से विश्व ने उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और बीसवीं सदी के प्रारंभ में आर्थिक एकीकरण की प्रक्रिया में भूमंडलीकरण की अवधारणा को महसूस किया। भूमंडलीकरण समकालीन विश्व की विशिष्टताओं में से एक है। वस्तुतः यह संपूर्ण विश्व को एक गाँव में बदलने की अवधारणा है जो सीमाओं, सरहदों, दीवारों, विभिन्नताओं से परे है, भूमंडलीकरण का प्रत्यक्ष संबंध बाज़ारवाद से हैं। इसी का प्रभाव है कि प्रत्येक गतिविधि व्यावसायिक दृष्टिकोण या तो स्वयं अपना रही है या अपनाने को मज़बूर है। संगीत, कला, विज्ञान, दर्शन आदि के साथ ही साहित्य पर भी व्यावसायिक का प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई पड़ रहा है। वास्तव में यह वैश्वीकरण आंचलिकता, स्थानीयता व क्षेत्रीयता का धुर विरोधी है चाहे वो कला के क्षेत्र में हो या अन्य किसी क्षेत्र में, इसी का परिणाम है कि देशज तत्वों पर संकट दिन ब दिन गहराता जा रहा है। भाषा भी इसी देश को झेल रही है। यही एकमात्र कारण है जिससे अंग्रेज़ी का दबदबा निरंतर बढ़ता जा रहा है। भारत में हिंदी उपभोक्ता समाज की भाषा है अतः विदेशी निवेशकों और कंपनियों को भारत के धरातल पर उतरने के लिए एवं उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए हिंदी के सहारे की सख्त आवश्यकता है। अपनी इसी आवश्यकता के चलते वे अपने उत्पादों की जानकारी, उनकी विज्ञापन सामग्री हिंदी में प्रस्तुत तो कर रहे हैं पर उसमें वे गुणवत्ता मानकीकरण की अनदेखी कर रहे हैं। गैर भाषाई दक्षता प्राप्त लोगों की ओर से किया गया अनुवाद न केवल हास्यास्पद होता है बल्कि कई बार अनजाने में या सरलता और सहजता के नाम पर हिंदी के स्वरूप के साथ छेड़छाड़ भी साबित होता है। यह बदलाव अगर लचीलापन की जद में हो तब तो उचित है परन्तु जब भाषा की अस्मिता से ही खिलवाड़ हो तो स्थिति चिंताजनक हो जाती है। शनैःशनैः यह हिंदी के अपने शब्दों का स्थान लेने लगता है जो भाषाई खतरा बन कर उभरता है।

आज हिंदी किसी प्रदेश विशेष की भाषा न रहकर समूचे देश की भाषा बन गई है विदेशों में भी इसका पठन पाठन हो रहा है। प्रवासी भारतीय साहित्य अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर हिंदी को अपनी विशिष्ट पहचान दिला रहा है, इस प्रकार हिंदी भाषा और साहित्य का दायरा निःसंदेह विश्व के मानचित्र पर बढ़ा है परन्तु विज्ञापनों व समाचार माध्यमों में प्रयुक्त हो रही हिंदी भाषा ने इसके स्वरूप व भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है।

भारत एक युवा राष्ट्र है और युवावर्ग सर्वाधिक चिन्तित रोज़गार को लेकर है, अगर हिंदी को रोजगारोन्मुखी आयाम प्रदान किए जाए तो युवाशक्ति इस भाषा से और अधिक जुड़ सकती है। इस हेतु शिक्षा प्रणाली में बदलाव की आवश्यकता है ताकि यह भाषा अपनी वास्तविक प्रतिष्ठा प्राप्त कर सके। अनुवाद को बढ़ावा देकर हिंदी की बाईस बोलियों के साहित्य को प्रकाश में लाया जा सकता है। इसी के साथ आवश्यकता है इस भाषा के साहित्य को पुनर्जीवित करने की, क्योंकि इस समय यह मात्र एक वैचारिक अखाड़ा बनकर रह गया है जिसमें प्रयोगवाद, मार्क्सवाद उत्तर आधुनिकतावाद, संरचनावाद, विखण्डनवाद निरंतर जूझ रहे हैं अतः दरकार है ऐसे साहित्य सृजन की जो संवेदनात्मक ज़मीन तैयार कर हिंदी भाषा की पौधा को हरिताभ कर सकता है।

वैश्वीकरण के दौर में फैल रही है हिंदी

मंजु.एम

एम ए हिंदी
श्रीशंकराचार्य संस्कृत
विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम

वैश्वीकरण, बाज़ारीकरण और सूचना क्रान्ति के इस दौर में तत्क्षण बदलते वैश्विक परिदृश्य के बीच हिंदी भाषा एक नए जोश के साथ उभर रही है। आज भारत वैश्विक अर्थ जगत में महाशक्ति बनकर उभर रहा है। विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली माने जाने वाले देश अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा तो अपने देश के नागरिकों को कई बार हिंदी सीखने की सलाह दे चुके हैं क्योंकि उन्हें भी लगता है कि भारत एक उभरती हुई विश्व शक्ति है और भविष्य में हिंदी सीखना अनिवार्य होगा। भारत की असली ताकत हिंदी भाषा है। आम बोलचाल की हिंदुस्तानी हिंदी को देश की आधे से अधिक जनसंख्या बोलती समझती है। विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच अधिकतर हिंदी ही संवाद सेतु का काम करती है। भूमंडलीकरण से विज्ञापनी हिंदी का विकास संवर्धन हो रहा है। भारत की 100 करोड़ की जनसंख्या में 18 करोड़ से अधिक लोगों की मातृभाषा हिंदी है। 30 करोड़ लोगों को इसका कार्यसाधक ज्ञान है। 22 करोड़ लोग ऐसे हैं जो किसी न किसी रूप में हिंदी भाषा के संपर्क में आते हैं। इस प्रकार 100 करोड़ की आबादी में से 70 करोड़ लोग एक भाषा के व्यवहार से जुडे हैं।

भारत में उस समय 30 करोड़ का एक मध्यम वर्गीय उपभोक्ता बाज़ार सहज रूप से विकसित हो चुका है और इस वर्ग तक पहुँचने के लिए हिंदी और भारतीय भाषाएँ विशेष कारगर माध्यम बन रही हैं। वैश्वीकरण के मौजूदा दौर में भारतीय बाज़ार की ताकत जैसे-जैसे बढ़ेगी, भारतीय भाषा और हिंदी की भूमिका व्यापक होगी। इस युग में औद्योगिक उत्पाद, उपभोक्ता, बाज़ार और टेकनोलॉजी का सर्वथा नया संबंध बन रहा है। वैश्वीकरण के दौर में हमारे बीच जो चीज़ें बिक रही हैं वे दुनिया के किसी भी हिस्से का उत्पाद हो सकती है पर बिक रही हैं हमारी

भाषा में। हिंदी भाषा में वह ताकत है। यही कारण है कि आज सर्वाधिक विज्ञापन भी हिंदी में आते हैं। इंटरनेट और सोश्यल मीडिया पर भी हिंदी का प्रभाव बढ़ रहा है। अब कई सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर अंतर्निर्मित हिंदी यूनिकोड़ की सुविधा के साथ आ रहे हैं। इससे हिंदी की तकनीकी समस्याएं लगभग समाप्त

हो गई है। अब समय है कि सभी इंटरनेट प्रयोक्ता रोमन लिपि में हिंदी लिखने की बजाय देवनागरी में ही हिंदी लिखें। अधिकांश, बड़ी बाज़ार दिख रहा है जिससे वे हिंदी तकनीक पर सभी

सुविधाएं प्रदान कर रही हैं। भारतीय युवा यूट्यूब पर सर्वाधिक 93 प्रतिशत वीडियो हिंदी में देखते हैं।

हिंदी पूरी तरह से सक्षम और समर्थ भाषा है। क्योंकि इसकी सबसे बड़ी विशेषता तो यह है कि इसे जैसे बोला जाता है वैसा ही लिखा भी जाता है। यानी हिंदी भाषा पूरी तरह से ध्वनि और उच्चारण आधारित भाषा है। यह खूबी विश्व की अन्य किसी भी भाषा में नहीं है। अंग्रेज़ी सहित विश्व की अन्य भाषाओं के लिखने और बोले जाने में काफी अंतर होता है। हिंदी भाषा का जन्म संस्कृत भाषा से हुआ है। वैज्ञानिकों द्वारा संस्कृत और हिंदी भाषा को ध्वनि विज्ञान और दूरसंचारी तरंगों के माध्यम से अंतरिक्ष में संदेश भेजने के लिए भी सर्वाधिक उपयुक्त पाया गया है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी का फैलाव लिपि के स्तर पर भी दिख रहा है। देश में विज्ञापनी भाषा में हिंदी का बढ़ता प्रयोग इसका उदाहरण है। वैश्वीकरण के बाद हुए भाषायी विस्तार से हिंदी में भारतीय भाषाओं के शब्द ही नहीं आए, बल्कि इसका फैलाव अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अप्रवासियों और विदेशियों की बोली में देखा जा सकता है। मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, जमैका, गुयाना आदि देशों में करीब पचास फीसद लोग हिंदी का प्रयोग करते हैं। अमेरिका, कन्नडा जैसे देशों में अप्रवासियों की बड़ी आबादी कुछ अलग प्रकार की हिंदी बोलती है। वहाँ के हिंदी रेडियो कार्यक्रम भारतीय रेडियो कार्यक्रमों से ज़्यादा गुणवत्ता नज़र आती है।

हिंदी किसी प्रदेश विशेष की भाषा न रहकर समूचे देश की भाषा बन गई है। विदेशों में भी इसका पठन-पाठन हो रहा है। प्रवासी भारतीय साहित्य अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर हिंदी को अपनी विशिष्ट पहचान दिया रहा है। इस प्रकार हिंदी भाषा और साहित्य का दायरा निःसंदेह विश्व के मानचित्र पर बढ़ा है परंतु विज्ञापनों व समाचार माध्यमों में प्रयुक्त हो रही हिंदी भाषा ने इसके स्वरूप व भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है। हिंदी के सर्वमान्य मानकीकृत रूप को अपनाने और इसे व्यावहारिक स्तर पर प्रचलित करने का कारण यह है कि हिंदी जन-जन की भाषा है। इसका प्रसार भी भाषाई ज्ञान के दायरों से दूर व्यावहारिकता की छांव में ही हो सकता है।

वैश्वीकरण का केंद्रीय तत्व है - सूचना और ज्ञान की विश्वव्यापी सर्वसुलभ साधनों का वाणिज्यीकरण और प्रौद्योगिकी आश्रित कार्यक्रमों का उपकरण के रूप में अधिक से अधिक विकास करना। सूचना प्रौद्योगिकी के युग में भाषा को मनुष्य की आवश्यकताओं के अलावा मशीन कंप्यूटर को नित नई मार्गों को पूरा करना पड़ रहा है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आज भाषा से अधिक प्रौद्योगिकी का महत्व बढ़ रहा है। लेकिन ज्ञान-विज्ञान के लिए भाषा के माध्यम से ही आगे बढ़ा जा सकता है। भाषा विज्ञान के क्षेत्र विशेष में भाषा के अध्ययनों का विकास हुआ जो किसी न किसी रूप में प्रौद्योगिकी तक जा पहुँचा और भाषा की प्रकृति अर्थ संभावनाओं पर चिन्तन कर भाषा की गहराईयों का पता लगाया जा रहा है। भूमंडलीकरण तथा आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से भाषा का स्वरूप बदल गया है।

कुछ वर्ष पूर्व तक हिंदी को गंवारों, जाहिलों और कम पढ़े-लिखे लोगों की भाषा माना जाता था। लेकिन वैश्वीकरण और बाज़ारीकरण के इस दौर में यह सोच तेजी से बदल रहा है। भारत का कॉर्पोरेट जगत मज़बूरी में ही सही, हिंदी को हाथों-हाथ स्वीकार कर रहा है। भारत में उपभोक्ता वस्तुओं के बृहद बाज़ार को आज अनदेखा करना असंभव है। भारतीय बाज़ार विदेशी कंपनियों के लिए खुलने के साथ ही कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत में पदार्पण किया। विपणन, मार्केटिंग और व्यापार में भारतीयों से कहीं ज़्यादा माहिर इन कंपनियों का यह अनुभव था कि किसी भी देश में वहाँ की भाषा, संस्कृति और जायका जाने बिना अपने पांव जमाना आसान नहीं है। ऐसे में इन कंपनियों ने अपने उत्पादों को भारतीय ज़रूरतों के हिसाब से बलकर पेश किया। अपने उत्पादों के विपणन के लिए इन कंपनियों ने हिंदी भाषा को चुना क्योंकि यह भाषा सबसे बड़े लक्ष्य समूह तक पहुँचती है। आज व्यापार के विस्तार के लिए हिंदी का दामन थामना पड रहा है और हिंदी बाज़ार के साथ आगे बढ़ रही है। वैश्वीकरण के इस दौर में अंग्रेज़ी का जो वर्चस्व अचानक बढ़ा हुआ प्रतीत हो रहा है, वह भयकारी कतई नहीं है। भाषा की संवेदनात्मक शक्ति की परख रखने वाले और बाज़ार का रहस्य जानने वाले लोग बखूबी समझते हैं कि यह समय हिंदी जैसी जनभाषा को सीमित और संकुचित करने का नहीं है, बल्कि हिंदी की शक्ति और सामर्थ्य में प्रसार लानेवाला है। क्योंकि हिंदी भारत जैसे विशाल देश की प्रमुख संपर्क भाषा है। हिंदी स्वभाव से जनभाषा और स्वरूप में सर्वग्राही भाषा है।

एचएलएल - स्वस्थ पीढियों के लिए नवान्वेषण की ओर एक संगठन

वेणुगोपाल.एस

उप महा प्रबंधक
एचएलएल - पेरूरकडा फैक्टरी

यह गर्व की बात है कि एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड, भारत सरकार के अधीन का उद्यम, ने 1969 में एक कंडोम फैक्टरी के रूप में अपनी यात्रा शुरू करके अब पचास वर्ष पूरा किया है। आज इसके खजाने में 7 फैक्टरियाँ और 5 समनुषंगी कंपनियाँ हैं। 'स्वस्थ पीढ़ियों के लिए नवान्वेषण' इस मोटो से प्रारंभित एचएलएल ने अपनी मातृ यूनिट पेरूरकड़ा फैक्टरी के बाद 1986 को कनगला में बेलगाम फैक्टरी शुरू की। यहाँ कंडोम के अलावा गर्भनिरोधक गोलियाँ, माला-डी, माला-एन और बाद में मौखिक गर्भनिरोधक गोलियों के रूप में सहेली गोलियों का विनिर्माण तथा विपणन चालू हो गया।

सर्वेक्षण के अनुसार मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता का अभाव फंगल संक्रमण और अन्य बीमारियों का कारण बन जाता है। स्वास्थ्य रक्षा को प्रमुखता देनेवाला एचएलएल ने यह एक सामाजिक समस्या समझकर इसको हल करने और स्वास्थ्य परिरक्षा में स्वच्छता कायम रखने के उद्देश्य से ही सैनिटरी नैपकिन का विनिर्माण शुरू किया। इसके अलावा कई जगहों पर सैनिटरी नैपकिन वेंटिंग मशीन संस्थापित किया गया। यह एचएलएल के निगमित मुख्यालय में भी उपलब्ध है। आगे एचएलएल का लक्ष्य है, कंपनी के अन्य फैक्टरियों एवं कार्यालयों में यह वेंटिंग मशीन संस्थापित करना, इस प्रकार एचएलएल अन्य संस्थाओं के लिए एक मार्गदर्शक बन गया है।

एचएलएल का अस्पताल उत्पाद के क्षेत्र में ब्लड बैग, कॉपर-टी, सर्जिकल स्यूचेर्स आदि का योगदान उल्लेखनीय है। एकल ब्लड बैग के रूप में आक्कुलम फैक्टरी में अपना उत्पादन शुरू करने के बाद अब मल्टिपल ब्लड इकट्ठा करने के नीडल बैग में और नीडल प्रोटेक्टर में भी अपना स्थान जमाया गया है। इसके अलावा गर्भनिरोधक कॉपर-टी के कई रूपांतर - एम-केयर, टी-केयर आदि का भी विपणन किया गया। अभी कॉर्पोरेट आर & डी की वजह से हॉर्मोन रिलीज़िंग जे यु डी को पेंटेंट मिला तथा पूर्ण रूप से इनका उत्पादन तथा विपणन प्रारंभ हुआ। अवशोषित और गैर अवशोषित स्यूचर की श्रेणी में अब बहुत स्यूचर आम जनता के लिए उपलब्ध हैं। इसके अलावा श्री चित्रा तिरुनाल इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेस की सहायता से हैड्रोसेफालस षंड भी विपणन किया जाता है।

आज बाज़ार में मूड्स कंडोम के विविध रूपांतर उपलब्ध हैं। सामाजिक मीडिया युवा पीढ़ियों के बीच अनिवार्य अंग बन चुका है। मूड्स के अभियान से अनेक युवाओं को जागरूक बना सकते हैं। विश्व के सब से अच्छा ब्रांड है मूड्स। विश्व में 19 विभिन्न ब्रान्डों में प्राप्त दुनिया के एकमात्र ब्रांड है मूड्स। मूड्स प्लानेट वेबसाइट के द्वारा मूड्स कंडोम अधिक मात्रा में विपणन किया जाता है। 63 देशों में मूड्स निर्यात कर रहा है।

आगे, एचएलएल ने राज्य सरकार के साथ मिलकर आम जनता को किफायती दर पर दवाएँ उपलब्ध करने की योजना शुरू की है। दवाओं की दूकानों के अलावा रोग निर्णय केंद्र एवं नैदानिक केंद्र भी प्रारंभ किया गया। एचएलएल ने जनसंजीवनी किफायती मूल्य दवाओं के विपणन केंद्र देश के विभिन्न कोनों में शुरू करके इन केंद्रों की सूचिका राज्य के विविध अस्पतालों में प्रकाशित किया है।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की सहायता से भारत भर के सभी स्तर के लोगों को किफायती दर पर दवाएँ उपलब्ध कराना एचएलएल का उद्देश्य है। अब तिरुवनंतपुरम मेडिकल कॉलेज में हिंदलैब्स शुरू हो गया है। स्वस्थ संपन्न जनता ही देश की संपत्ति है। आज उच्च स्तर की दवाएँ एवं चिकित्सा सेवाएँ आम जनता के लिए अप्राप्य है। एचएलएल के लाइफकेयर केंद्रों से ये दवाएँ एवं चिकित्सा सेवाएँ 60 से 80 प्रतिशत तक कटौती दर पर मिलती हैं।

एचएलएल ने प्राकृतिक रबड़ पर आधारित महिला कंडोम वेलवेट का उत्पादन तथा विपणन प्रारंभ किया है। यह उत्पाद महिलाओं को संपूर्ण सुरक्षा एवं सुरक्षित यौन संबंध पर बल देता है, जिससे यह महिला सशक्तीकरण के लिए एकदम सहायक बन जाता है। यह अनावश्यक गर्भधारण रोकने और एच आई वी, एड्स जैसी बीमारियों से सुरक्षित रखने के लिए सहायक बन गया। महिलाओं के लिए गर्भनिरोधक उपायों का प्रयोग करने से जनसंख्या नियंत्रण भी काबू में रख सकते हैं। महिलाओं और पुरुषों के लिए उत्तम पुनरुत्पादक स्वास्थ्य उपायों को विकसित करना ही एचएलएल अनुसंधान विकास विभाग का लक्ष्य रहा है। वेलवेट के भारतीय पेटेंट के लिए ब्रज़ील, दक्षिण आफ्रिका और आफ्रिकी क्षेत्रीय बौद्धिक संपदा संगठनों में आवेदन दिया है। यह वेलवेट विश्व में सब से किफायती दर पर मिलनेवाला महिला कंडोम है। इस उत्पाद से आज महिलाएँ गर्भधारण के बारे में स्वयं निर्णय ले सकती हैं, जिससे अनचाहे गर्भधारण से बचाव मात्र नहीं स्वस्थ संपूर्ण परिवार एवं समाज प्रदान करने में सहायक भी बन गया। इसके अलावा एचएलएल, आम जनता को दवाएँ एवं इंप्लांट्स किफायती दर पर उपलब्ध कराने के लक्ष्य से अमृत योजना समयबद्ध तरीके से प्रारंभ करने में सक्षम बन गया। देश के सभी जिलाओं में यह योजना विकसित करने के लिए केंद्र सरकार लक्ष्य करता है। केंद्र सरकार की अमृत योजना के ज़रिए जीवन रक्षा दवाएँ 90% तक कम कीमत पर मिलती हैं। कैंसर, हृदयरोग आदि बीमारियों के लिए दवाएँ, हृदयरोग चिकित्सा से संबंधित आंतरिक इंप्लांट्स आदि 60 से 90% तक किफायती दर पर अमृत योजना के माध्यम से उपलब्ध कराती है। अमृत फार्मेसी एम्स में शुरू हो गयी है। इसके बाद गुजरात सरकार की परियोजना के रूप में दिसंबर, 2016 में 40 अमृत केंद्र शुरू किया गया।

एचएलएल बायोटेक लिमिटेड, एचएलएल लाइफ़केयर लिमिटेड की एक समनुषंगी, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन देश में लागत प्रभावी पेंटावलेंट एवं हेपटैटिस बी वैक्सीन का लॉच करके प्रथम सार्वजनिक उपक्रम बन कर और एक प्रमुख मील पत्थर दर्ज किया गया है। एचबीएल भारत सरकार के रोग प्रतिरक्षण कार्यक्रम के लिए पेंटावलेंट बी, हेपटैटिस बी वैक्सीन की आपूर्ति प्रारंभ करेगा और साथ-साथ अन्य संस्थाओं की आवश्यकता पूरा करेगा।

देश की स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार ने सस्ती कीमतों पर सुरक्षा और प्रभावी वैक्सीन उपलब्ध करने के लिए डब्लियुएचओसीजीएमपी के दिशानिर्देशों के अनुसार सार्वजनिक क्षेत्र में विश्वस्तरीय वैक्सीन विनिर्माण सुविधा स्थापित करने का निर्णय लिया। एचएलएल पेंटावलेंट वैक्सीन पूरी तरह से पाँच बीमारियों - डिफ्तीरिया, टेटनस, हेपटैटिस बी आदि से संरक्षण देता है। पेंटावलेंट वैक्सीन रोग प्रतिरक्षण में हाल ही के वैश्विक पहल में एक है। पेंटावलेंट वैक्सीन के निहित लाभ यह है कि एकल इंजक्शन के साथ पाँच बीमारियों से संरक्षण देता है।

एचएलएल के गर्भनिरोधक कंडोम का आउटलेट तिरुवनंतपुरम, गोवा, कोच्चि में खोला गया। एचएलएल के मूड्स प्लानेट से किसी भी तरह के कंडोम बेहिचक से चुन लिया जा सकता है। हाल ही में, एचएलएल का लाइफ़केयर केंद्र गीतांजली अस्पताल, तिरुवनंतपुरम में प्रारंभ हुआ। आँख चिकित्सा के लिए आवश्यक चश्मा, लेंस, फ्रेम आदि किफायती दर पर इस लाइफ़केयर केंद्र से मिलेगा। यह, आँख एवं कान संबंधी बीमारियों के लिए उच्च चिकित्सा उपलब्ध कराने वाला तिरुवनंतपुरम का प्रमुख अस्पताल है और यह नया लाइफ़केयर केंद्र देश में सोलहवाँ और राज्य में नौवाँ है। एचएलएल का पहला लाइफ़केयर केंद्र 2011 को तिरुवनंतपुरम मेडिकल कॉलेज में शुरू हुआ था। केरल के अलावा कर्नाटका, उडीसा, हिमाचल प्रदेश, आंध्रा प्रदेश सहित विविध राज्यों में सक्रिय रूप से कार्यरत इन लाइफ़केयर केंद्रों की सेवा अधिक लोगों तक पहूँचाना और स्वास्थ्य रक्षा उत्पाद किफायती दर पर उपलब्ध कराना एचएलएल का प्रमुख लक्ष्य है। इसके अलावा एचएलएल ने कॉर्पोरेट सामाजिक प्रतिबद्धता के तहत करकुलम गाँव तथा कनगला गाँव को गोद लिया था। बाद में, यहाँ समय - समय पर विविध प्रकार के मेडिकल कैंप भी आयोजित किये गये। इन कैंपों में नेत्र जाँच में भाग लिए करीब सौ लोगों को एचएलएल ने मुफ्त रूप से चश्मा प्रदान की। इन सभी प्रयासों के फलस्वरूप, स्वास्थ्य क्षेत्र के उत्तम सेवाओं के उपलक्ष्य में एचएलएल फेडरेशन ऑफ इंडियन चेंबर व इंडस्ट्री (फिक्की) द्वारा संस्थापित स्वास्थ्य रक्षा उत्कृष्ट पुरस्कार के लिए हकदार बन गया। दिल्ली के एम्स में कार्यरत एचएलएल के मुफ्त आम औषधशाला को उपभोक्ता विभाग में उत्कृष्ट व्यवस्था मॉडल के रूप में चुन लिया गया। यह एचएलएल द्वारा लागू की जानेवाली नूतन पद्धतियों के लिए प्रेरणादायक बन गया है।

संक्षेप में कहें तो एचएलएल स्वस्थ पीढियों के नवान्वेषण में सदा जागरूक है तथा स्वास्थ्य संबंधी सभी परियोजनाएँ अतीव दिलचस्पी के साथ निश्चित समय के अंतर पूरा करके राष्ट्र के सामने स्वस्थ पीढियों का प्रतीक बन कर उन्नती की ओर अग्रसर हो रहा है।

श्रद्धांजलि

एक युग का अंत...

राजभाषा विधा के कर्णदार श्री डी.कृष्णपणिक्कर, सेवानिवृत्त उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय का स्वर्गवास 25.08.2018 को उनके आवास में हुआ। वर्ष 1938 को बालरामपुरम में श्री दामोदरपणिक्कर और श्रीमती सी.देवकी देवी के सुपुत्र के रूप में जन्मे श्री डी.कृष्णपणिक्कर की हिंदी सेवा की शुरुआत 1961 को एस एन कॉलेज में लेक्चर्र के रूप में हुई। बाद में, उन्होंने हिंदी प्राध्यापक, सहायक निदेशक (राजभाषा), हिंदी अधिकारी एवं उप निदेशक (कार्यान्वयन) के पद पर विभिन्न कार्यालयों में कार्यभार संभाला। 36 वर्ष की लंबी हिंदी सेवा के बाद, वे 31 मई 1996 को क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, बैंगलूर से उप निदेशक (कार्यान्वयन) के पद से सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्ति के बाद भी वे करीब दस साल तक रेलवे, स्वास्थ्य, वित्त आदि मंत्रालयों के हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य भी रहे। वे कई वर्षों तक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिव भी थे।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) के नेतृत्व में 11.09.2018 को एचएलएल हाइट्स के सभाकक्ष में आयोजित श्रद्धांजलि बैठक में नराकास (उपक्रम) के सदस्य कार्यालयों के हिंदी कार्मिकों के अतिरिक्त तिरुवनंतपुरम के अन्य टोलिकों के सदस्यों की भी सहभागिता हुई। इस अवसर पर डॉ.वी.के.जयश्री, उप महा प्रबंधक (हिंदी) एवं सदस्य सचिव, नराकास (उपक्रम), श्री सामराज, हिंदी सलाहकार, सी - डैक, डॉ.हरींदर शर्मा, सहायक निदेशक, दूरदर्शन, श्री जयपाल, हिंदी अधिकारी, आईआईएसटी, श्रीमती उषा, सहायक निदेशक, आकाशवाणी , श्रीमती ज्योति प्रभा, एयर इंडिया, श्रीमती राजलक्ष्मी बी एस एन एल, श्री जेजी मात्यु, जनगणना कार्यालय, श्री अनूज, सीपीडब्लीयु आदि राजभाषा के कार्मिकों ने अपने गुरू और मेंटर के रूप में रहे स्वर्गीय श्री डी. कृष्णपणिक्कर को श्रद्धांजलि अर्पित की।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

नवरात्रि पूजा समारोह

हार्दिक बधाइयाँ

श्री ए.सी मोइदीन, व्यवसाय, खेल एवं युवा कार्यक्रम मंत्री से पेरूरकडा फैक्टरी के प्रदूषण नियंत्रण में सतत प्रयासों एवं पर्यावरण संरक्षण पहलों के लिए केरल राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड पुरस्कार (दूसरा पुस्कार) प्राप्त कर रहे हैं श्री ई.ए सुब्रमण्यन, निदेशक (तकनीकी एवं प्रचालन)। श्री वी. कुट्टप्पन पिल्लै, यूनिट चीफ़, पेरूरकडा फैक्टरी और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को भी देखा जाता है।

इनफोकस

डॉ. सुरेष कुमार. आर
उप प्रबंधक (राजभाषा)

बाढ से पीडित केरल के उत्थान में एचएलएल भी

श्री ई.ए. सुब्रमण्यन, निदेशक (तकनीकी एवं प्रचालन) 06 सितंबर, 2018 को राज्य में बाढ़ से पीडितों के लिए मुख्य मंत्री के संकट राहत नीधि में संगठन के कर्मचारियों के अंशदान रु. 28.26 लाख का चैक केरल के व्यवसाय मंत्री श्री ई. पी. जयराजन को सौंपते हैं। इस अवसर पर डॉ. गीता शर्मा, निदेशक (वित्त), श्री. के. विनयकुमार, वरिष्ठ उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों और संघ नेताओं के प्रतिनिधियों को भी देखे जाते हैं।

श्री ई.ए. सुब्रमण्यन, निदेशक (तकनीकी एवं प्रचालन) ने 21 अगस्त, 2018 को कोच्चि और चालकुडी में बाढ़ से पीडितों के लिए एचएलएल के कर्मचारियों द्वारा एकत्रित खाद्य, दवा और कपड़े लेकर जानेवाले ट्रक का फ्लाग ऑफ किया।

एचएलएल ने बाढ से पीडितों की राहत के लिए हिंटन एयरबेस नई दिल्ली से दक्षिणी वायु कमान और नियंत्रण केंद्र, तिरुवनंतपुरम को प्रेषित करीब 80 टन औषध एवं फार्मास्यूटिकल्स का संग्रह करके वितरण करने के कार्य का समन्वय किया।

ताज़ा खबर

कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास केंद्र (सीआरडीसी), आक्कुलम में 01 अप्रैल , 2018 को एचएलएल प्रबंधन अकादमी (एचएमए) द्वारा आयोजित 'थिंक टैंक' भाषण श्रृंखला के सिलसिले में ''सरकारी प्रक्रिया री इंजीनियरिंग '' विषय पर सभा को संबोधित करते हैं डॉ. डी सजित्त बाबु, अतिरिक्त कौशल अधिग्रहण कार्यक्रम के मुख्य कार्यपालक अधिकारी।

श्री जोबी, प्रसिद्ध कॉमडी अभिनेता 24 अप्रैल 2018 को एचएलएल कर्मचारियों के बच्चों के लिए आयोजित बालशिबिरम सम्मर कैंप के दौरान छात्रों के साथ बातचीत कर रहे हैं।

श्री सियाद. बी केमिकल इंस्पेक्टर, फैक्टरी एवं बॉयलर विभाग 16 अप्रैल 2018 को एचएलएल पेरूरकडा फैक्टरी में ''रासायनिक सुरक्षा, फैक्टरी अधिनियम एवं नियम और व्यवहार आधारित सुरक्षा एवं चिकित्सा आपातकालीन प्रबंधन'' विषय पर बात करते हैं।

श्री ई.ए सुब्रमण्यन, निदेशक (तकनीकी एवं प्रचालन) 10 जुलाई, 2018 को एचएलएल कॉर्पोरेट मुख्यालय में आयोजित वेल्ड कप फुट बॉल पूर्वकथन प्रतियोगिता का उद्घाटन करते हैं।

निवारण समिति द्वारा 13 जुलाई, 2018 को ''कार्यस्थल पर महिलाओं के शारीरिक और मानसिक कल्याण'' विषय पर आयोजित भाषण।

कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास केंद्र (सीआरडीसी), आक्कुलम में 20 जुलाई, 2018 को एचएलएल प्रबंधन अकादमी (एचएमए) द्वारा आयोजित 'थिंक टैंक' भाषण श्रृंखला के सिलसिले में ''बिसनेस ऑफ स्पेइस '' विषय पर सभा को संबोधित करते हैं श्री राकेश. एस, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक आन्ट्रिक्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड।

एचएलएल पेरूरकडा फैक्टरी में 13 जुलाई, 2018 को आयोजित मुफ्त चिकित्सा शिविर।

पारिभाषिक शब्दावली

Ability	योग्यता/क्षमता
Abolition of post	पदों का उन्मूलन
Above cited	ऊपर उद्धृत
Above mentioned	उपर्युक्त
Absence	अनुपस्थिति
Absent	गैर हाजिरी
Acceptable Tender	स्वीकार्य निविदा
Acceptance	स्वीकृति
Acceptance Quality Level	स्वीकृत गुणवत्ता स्तर
Accident leave	दुर्घटना अवकाश
Accommodation	आवास
Accordingly	तदनुसार
Account (Bank Account)	लेखा (बैंक चालू खाता)
Account head	लेखा - शीर्ष
Accounts Department	लेखा विभाग
Accumulated loss	संचित हानी
Achievement	उपलब्धि
Acknowledgement	पावती
Acquisition	अधिग्रहण
Activity	कार्यकलाप/गतिविधि
Acts	कार्य
Actual	वास्तविक
Actual production number	वास्तविक उत्पादन संख्या
Addendum	अनुशेष
Addition	परिवर्धन
Additional	अतिरिक्त
Additional Secretary	अपर सचिव
Adjourn	स्थगित करना
Adjournment petition	स्थगन अर्जी
Adjustment	समायोजन
Administration	प्रशासन
Administrative	प्रशासनिक
Administrative sanction	प्रशासनिक मंजूरी

Admissible	स्वीकार्य
Admitted	स्वीकृत
Advance	अग्रिम
Advanced loans	अग्रवर्ती ऋण
Advances	पेशगी
Advertisement	विज्ञापन
Advice	सलाह/परामर्श
Advisory committee	सलाहकार समिति
Affidavit	शपथपत्र
Affordable	सस्ती/किफायती
Against	विरुद्ध
Ageing oven	एजिंग ओवन
Agency	अभिकरण/एजेंसी
Agenda	कार्यसूची
Agent	अभिकर्ता, एजेंट
Agitation	समर/आंदोलन
Contract	अनुबंध
Agreement	समझौता, करार
Aid	सहायता/मदद
Air conditioning	वातानुकूल
Air compressor	एयर कंप्रेसर
Allocated fixed asset	आबंटित अचल परिसंपत्ती
Allotment	आबंटन
Allowance	भत्ता
Amendment	संशोधन
Amount	राशि/रकम
Analog multimeter	एनालॉग मल्टीमीटर
Analysis	विश्लेषण
Analyst	विश्लेषक
Analytical Report	विश्लेषणात्मक रिपोर्ट
Annex	उप भवन
Annexure	अनुबंध/संलग्नक
Annual Budget	वार्षिक वजट
Annual premium	वार्षिक प्रीमियम
Annual Report	वार्षिक प्रतिवेदन/रिपोर्ट

Annual review	वार्षिक समीक्षा
Annual turnover	वार्षिक व्यापारावर्त
Anonymously	अज्ञात रूप से
Answer	उत्तर
Antibiotics	एंटीबायोटिक्स
Appeal	अपील
Appeal Rules	अपील नियमावली
Appearance	उपस्थिति/प्रतीति
Appellate Authority	अपील प्राधिकारी
Appended	संलग्न
Applicability	प्रयोज्यता
Applicable	लागू
Application	आवेदन
Appointing Authority	नियुक्ति प्राधिकारी
Appointment	नियुक्ति
Appointment Order	नियुक्ति आदेश
Appraisal	मूल्यनिर्धारण
Appropriate action	उचित कार्रवाई
Approved	अनुमोदित
Approximate cost	अनुमानित लागत
Area	क्षेत्र
Arrangement	व्यवस्था
Articles of Association	संस्था के अंतर्नियम
Artistic	कलात्मक
As far as possible	जहाँ तक संभव हो
Assets	परिसंपत्तियाँ
Assistant	सहायक
Assistant Manager	सहायक प्रबंधक
Assisting Officer	सहायक अधिकारी
Associate Vice President	सह उपाध्यक्ष
Association	संघ
Assume	ग्रहण करना
Assurance	आश्वासन
Attachment	संलग्नक
Attested copy	अनुप्रमाणित प्रति

Audit	लेखापरीक्षा
Audit committee	लेखापरीक्षा समिति
Auditor	लेखापरीक्षक
Auditorium	ऑडिटोरियम
Authority	प्राधिकरण
Authorized	प्राधिकृत
Authorized by	प्राधिकृतकर्ता
Authorized medical Officer	प्राधिकृत चिकित्सा अधिकारी
Automatic condom testing machine	स्वचालित कंडोम परीक्षण मशीन
Availability	उपलब्धता
Award	पुरस्कार/एवार्ड
Awareness	जागरूकता
Bad debt written off	बट्टे खाते डाले गए अशोध्य कर्ज
Bad debts provision written back	पुनरांकित किए अशोध्य कर्ज प्रावधान
Bag Type	बैग प्रकार
Bags unloaded date	बैग अनलोड की गयी तारीख
Balance	बकाया/शेष
Balance provision	शेष प्रावधान
Balance Sheet	तुलन पत्र
Band sealing machine	बैंड सीलिंग मशीन
Bank account details	बैंक खाता विवरण
Bank balances	बैंक शेष
Bank charges	बैंक चार्ज
Bank Guarantee	बैंक गारंटी
Bankers	बैंकर
Banner	बैनर
Basic	मूल
Basic pay	मूल वेतन
Batch size	बैच आकार
Below the level	निचले स्तर
Beneficiary	लाभभोगी/लाभार्थी/हिताधिकारी
Benefit	लाभ/फायदा
Best value	उत्तम मूल्य
Bid opening date	बोली खोलने की तारीख
Bidder	बोलीधारक

Bilingual	द्विभाषी
Bill	बिल
Bio equivalence study	बयो समतुल्य अध्ययन
Bio-availability	बयो उपलब्धता
Biological Indicator	जैविक सूचक
Biotech	बायोटेक
Block	खंड/ब्लॉक
Blood	रक्त/ब्लड
Blood Bags	ब्लड बैग
Blood collection bag	ब्लड कलक्शन बैग
Blood transfusion set	रक्त/ब्लड आदान सेट
Board	बोर्ड/मंडल
Board of Director	निदेशक मंडल
Boarding	भोजन
Boarding arrangements	भोजन व्यवस्था
Boarding expenses	भोजन व्यय
Boarding and Lodging	भोजन और आवास
Bonafide	प्रामाणिक/वास्तविक
Bond	बंधपत्र/बॉण्ड
Bonus issue	बोनस इश्यू
Booking	बुक करना
Borosil glass measuring vessel	बोरोसिल ग्लास मापन वेसल
Borrowing Cost	उधार लागत
Borrowings	उधार
Botanical	बोटानिकल
Branch	शाखा
Breach of orders	आदेशों का उल्लंघन
Brief	संक्षिप्त
Broadcast	प्रसारण
BRT machine	बीआरटी मशीन
Budget	बजट
Budget Provision	बजट प्रावधान

www.hindlabs.in

स्वस्थ रहें....
खुश रहें....

→ 20% - 60% छूट पर
लेबोरटरी, स्कैन और अन्य टेस्ट

→ ओ पी क्लिनिक्स प्रख्यात डॉक्टरों के
नेतृत्व में

अधिक जानकारी के लिए :
9400027969, 0471 2443445/2443446

24x7 सेवा

स्पेश्यालिटी ओ पी क्लिनिक्स

- जनरल मेडिसिन
- थायरो क्लिनिक
- ऑर्थोपेडिक्स
- ऑपथैल्मोलॉजी
- ईएनटी
- पीडियाट्रिक्स
- कार्डियोलॉजी
- गैस्ट्रोएंटरोलॉजी
- डायाबैटोलॉजी
- नेफ्रोलॉजी
- पल्मोनोलॉजी
- डर्माटोलॉजी

हिंदलैब्स

नैदानिक केन्द्र & स्पेश्यालिटी क्लिनिक

एचएलएल का एक पहल, भारत सरकार का उद्यम

मेडिकल कॉलेज के सामने, तिरुवनंतपुरम

गोल्ड

मूड्स

कण्डोम